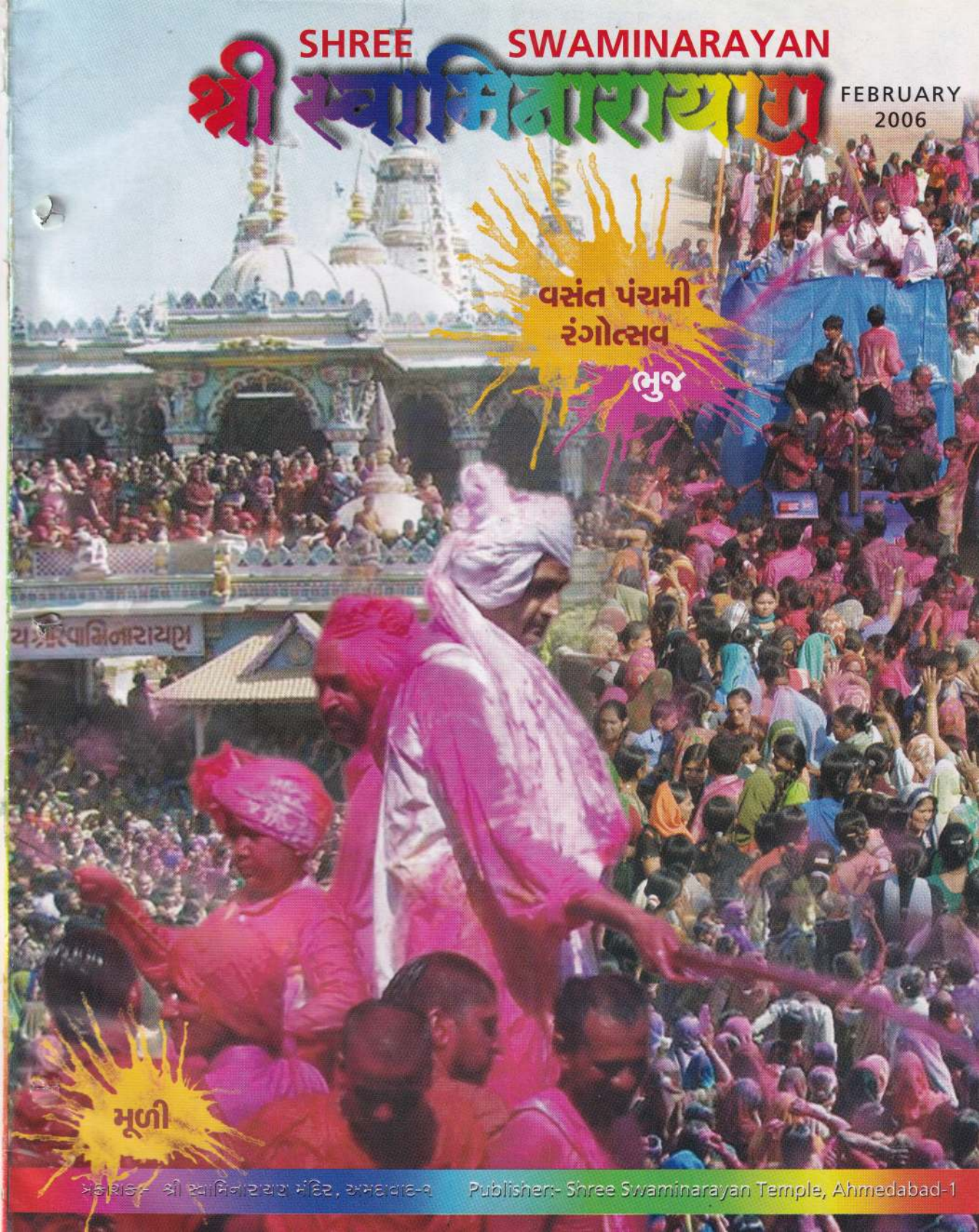


પ્રકાશક- શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧ Publisher:- Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1





कोलोनिया (यु.एस.ए.) श्री स्वामिनारायण मंदिर में धनुर्मास में श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में सुबह की धूप का लाभ लेते हुए हरिभक्त ।







लंदन के गेटविक विस्तारमें श्री स्वामिनारायण मंदिर का विधिवत भूमि-पूजन करते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और उसके बाद सभा में दर्शन देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।







नारणघाट और रिद्रोल मंदिर में श्रीहरि के छठ्ठे और सातवे वंशज के वरद हस्त निर्मित शाकतोस्व दर्शन।

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

SHREE SWAMINARAYAN

श्री स्वामिनारायण

वर्ष - ५ फरवरी -२००६



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री
तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

श्री स्वामिनारायण म्यूजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ - ९८२५३०९५९७
फेक्स : २७४१९५९७

दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स ०७९-२७४५२१४५

तंत्रीश्री
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)

पत्रिका (मासिक अंक) मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देशमें ५०१-००
विदेश ५०००-००
प्रति कोपी ५-००

प्रकाशन समय
प्रति माह (मास) की दिनांक ११ को
गुजराती, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषामें

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.

हिन्दी अनुवादक
डॉ. वाचस्पति मिश्र (प्रधान पंडित)
श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद

पत्तेमे परिवर्तन के लीये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

अ नु क्र म णि का

१.	अरमदीयम	२
२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा	३
३.	नीति रीति *तथा* प्रीति	४
४.	सद्‌गुरु ब्रह्मानंद स्वामी (पर्व-२)	६
५.	वाणी तथा पानी को गार कर पीना चाहिए	८
६.	सच्ची मित्रता	९
७.	जैसी भगवान की इच्छा	१०
८.	सत्संग सुरभि : उनसे हम दूर नहीं है	११
९.	सत्संग बालवाटिका	१३
	(१) भरी सभा में भगवान मां बने	
	(२) विश्वासी तरजाता है	
१०.	भक्तिसुधा	१७
	(१) शिक्षापत्री में पतिव्रता धर्म	
	(२) सत्संग की चाहना	
११.	प्रश्नपेटी	१६
१२.	समाचार वृत्तांत	२०

प्रकाशक
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद-१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८. फेक्स : २२१७६९१२.
श्री नरनारायणदेव युवक मंडल कार्यालय : २२१६६७६७
Visit us : www.swaminarayan.info
E-mail : sntemple@hotmail.com
www.swaminarayanmuseum.com / org

अस्मदीयम् तन्त्रीश्री की तरफ से.....

वचनामृत में श्रीजी महाराज ने भगवान के अवतारों के प्रकार की वात की है । इसी के साथ भगवान के अवतारों की मूर्तियों का प्रकार भी बताया है उसमें परमेश्वर की आठ प्रकार की मूर्ति, इसमें भी सबसे श्रेष्ठ एवं सुलभ मूर्ति पाषाण की है । जिसके दर्शन से मुमुक्षुओं को विशेष सुख की प्राप्ति होती है । इस के साथ स्वस्मं में भी अर्चास्वस्म ही सर्वजन समुदाय को अति सरलता से प्राप्त होता है ।

मूर्तियों तथा स्वस्मों के लिए बहुत योग्यता तथा धन की जरूरत होती है । अर्चास्वस्म ऐसी पाषाण की मूर्ति (प्रतिमा) के लिए इतनी दुर्लभता नहीं है । इसीलिए भगवान श्री स्वामिनारायण ने अपने हाथों से जगत के जीव मात्र का कल्याण करने हेतु तथा मोक्ष के लिए अपने स्वस्म को अपने ही हाथों से स्थापित करके प्राण प्रतिष्ठा किये हैं । ऐसा भूमंडल पर नव संख्या को पूर्ण करने वाला महामंदिरों मे से सर्वप्रथम गुजरात की राजधानी अहमदाबाद शहर में श्री नरनारायणदेव की स्थापना की थी । जो परमात्मा का अर्चास्वस्म प्रगट स्म अनंत जीवों को आत्यंतिक मोक्ष दर्शन मात्र से देता हैं । जब कि अनंतकोटि ब्रह्मांड के अधिपति सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण आज से १८५ वर्ष पूर्व प्राण प्रतिष्ठा किये होंगे तब उस समय लाखो हरिभक्तों को दर्शन का सुख तथा आनंद दिया होगा । वही आनंद आज भी इस दिव्य स्थान पर विराजमान भगवान श्री नरनारायणदेव का वार्षिक उत्सव मनाया जाता है, उस समय श्रीहरि ने स्वयं स्थापित अपने अपर स्वस्म दोनों आचार्यों के शुभ हाथों से महाभिषेक तथा आरती इत्यादि होती है । उस समय भक्तों को साक्षात् अक्षरधाम का सुख मिलता है । इस देव दुर्लभ दर्शन् का सुख तथा आनंद तो अनेक जन्मों का सुकृत एक साथ एकत्रित हो तभी जीव के नसीब में प्राप्त होता है । तो फाल्गुन शुक्ल ३ के मंगलकारी सुप्रभात मे आत्यंतिक मोक्षाधायक दर्शन का अलभ्य लाभ को प्राप्त करने से कैसे वंचित रहा जा सकता है ?

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)

- *शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का*

जयश्री स्वामिनारायण



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा

जनवरी-२००६

८. माणसा श्री स्वामिनारायण मंदिर तथा रिद्रोल श्री स्वामिनारायण मंदिर शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
९. माणेकपुर (घनश्यामनगर) जि. गांधीनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर में शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
११. श्री स्वामिनारायण मंदिर गौठीब (पंचमहाल) खात विधि प्रसंग पर पदार्पण ।
१२. नवा वाडज श्री स्वामिनारायण मंदिर में शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
मुबारकपुरा (जि. गांधीनगर) श्री स्वामिनारायण मंदिर में शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
१३. श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया धनुर्मास धुनि में दर्शन देने हेतु पदार्पण ।
१४. श्री स्वामिनारायण मंदिर अमदावाद धनुर्मास धुनि की पूर्णाहुति स्वहाथों से किये ।
१५. महेसाणा श्री स्वामिनारायण मंदिर में गुरुमंत्र का कार्यक्रम तथा हरिभक्तों के यहाँ सामूहिक पदार्पण ।
१६. प.भ. प्रवीणचंद्र हरमानभाई बारोट के यहाँ पदार्पण घाटलोडीया ।
१७. प.भ. मुकुन्दराय पूनमभाई अमीन के यहाँ लग्न प्रसंग पर आशीर्वाद देने हेतु पदार्पण, शीलज ।
प.भ. प्रहलादभाई केशवलाल के यहाँ महापूजा प्रसंग पर पदार्पण, राणीप ।
१८. डीसा (बनासकांठा) श्री स्वामिनारायण मंदिर में शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
१९. अंजार (कच्छ) पदार्पण ।
२०. प.भ. बिपीनभाई रणछोडभाई पटेल के यहाँ लग्न प्रसंग पर आशीर्वाद देने हेतु पदार्पण, मेमनगर ।
प.भ. गोविंदभाई मथुरदास पटेल के शो-रूम के उद्घाटन प्रसंग पर पदार्पण ।
प.भ. प्रविणभाई रणछोडभाई पटेल के यहाँ पदार्पण, सेटेलाईट ।
२१. श्री प्रभा हनुमान मंदिर जमीयतपुरा पारायण की पूर्णाहुति प्रसंग पर पदार्पण ।
२२. विहार गाँव में प.भ. माधवलाल नारायणदास पटेल के यहाँ पदार्पण ।
प्रो. आर.आर. शाह (श्री सहजानदं कालेज) के यहाँ लग्न प्रसंग पर आशीर्वाद देने हेतु पदार्पण, सेटेलाईट ।
प.भ. मयूरकुमार धीरुभाई सावलिया के यहाँ लग्न प्रसंग पर आशीर्वाद देने हेतु पदार्पण, सोलारोड ।
२४. प.भ. भूपेन्द्रभाई प्रभुदास पटेल के यहाँ लग्न पर्सग पर आशीर्वाद हेतु पदार्पण, वासणा ।
डॉ. किरण आर. ठक्कर, श्रीहर्षद आर. ठक्कर, श्री भूपेन्द्रभाई ठक्कर के यहाँ पदार्पण, राणीप ।
प.भ. डॉ. जी. के. पटेल के यहाँ सम्बन्ध प्रसंग पर पदार्पण, छत्राल ।
२५. गामडी गाँव में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।
प.भ. परसोत्तमभाई मथुरदास पटेल के यहाँ वास्तु पूजन प्रसंग पर पदार्पण, राणीप ।
श्री कश्यप नंदूभाई पटेल के यहाँ लग्न प्रसंग पर आशीर्वाद देने हेतु पदार्पण, मीठाखड़ी ।
२७. श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदावाद मंदिर में पारायण की पूर्णाहुति स्वहाथों से किये ।
२८. डांगरवा श्री स्वामिनारायण मंदिर पदयात्री संघ को आशीर्वाद देने हेतु पदार्पण ।
वहेलाल श्री स्वामिनारायण मंदिर शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
२९. श्री स्वामिनारायण मंदिर पोर (जि. गांधीनगर) पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।
नारायणपुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
३०. प.भ. रमणभाई चतुरभाई पटेल के यहाँ लग्न प्रसंग पर आशीर्वाद देने हेतु पदार्पण, उनावा ।
३१. मेडा (ता. कडी) श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

नीति रीति तथा प्रीति

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला (अहमदाबाद)

नीति पूर्वक धन कमाना तथा उसका रीतिपूर्वक उपयोग करना, खर्च करना तथा प्रीतिपूर्वक परमात्मा की भक्ति करना, इस त्रिवेणी संगम में स्नान करते रहिये तो जीवन की चरितार्थता है तभी जीवन में सुख शांति मिल सकती है ।

आज के जमाने में अनीति से अर्थोपार्जन, रुचि से उसका व्यय, भक्ति इत्यादिका स्वेच्छाचरण यह उल्टा व्यवहार सभी जगह देखने में आता है । किसी विचार के विना केवल एक मात्र धन कमाना ही सभी का दुर्लक्ष्य हो गया है । पैसा आने के बाद मनमाने ढंग से उसका अपव्यय करना, परमात्मा की भक्ति भेदभाव से करना आज सामाजिक व्यवस्था बन गयी है ।

श्री सहजानंद स्वामी महाप्रभु ने तो अत्यंत खूबीपूर्वक, नीति, रीति, प्रीति को शिक्षापत्री की आज्ञा में समालिया है । गुरुरामानंद स्वामी के अन्तर्ध्यान के बाद चौदहवें दिन फणेणी गाँव में श्री स्वामिनारायण भगवानने सर्व प्रथम धर्म सभा की थी । सभी भक्तजनों को सम्बोधित करके उद्घोषणा किये थे कि - हे भक्तों ! धर्म ही धन है । डग पग में धर्म का अनुसरण करके जीवन जीने वाला हर समय सुखी रहता है । धर्म का अनुसरण करके जीवन जीनेवाला हर समय सुखी रहता है । धर्म का श्रेष्ठ स्वरूप श्रद्धा है । श्रद्धावाले पुरुष को चाहिए कि इस लोक तथा पलोक में सहायक धर्म का प्रतिदिन नियम पूर्वक जैसे हो पालन करना चाहिए ।

शास्त्रानुसार नीति जैसे कहे वैसे ही धनोपार्जन करना चाहिए । उस प्राप्त धन में से दशांश या वीशांश धर्मादा प्रभु को भेंट करना चाहिए । बाद में अवशिष्ट धन को जीवन में लेना चाहिए । अनीति से प्राप्त किया गया धन तथा अरीति से उपयोग किया गया धन दूषण ही करता है । समाज में भले ही उस पुरुष की वाह-वाह होती है लेकिन अन्तःकरण तो आह-आह ही करता है ।

अजामिल ब्राह्मण होते हुए भी कुसंग के कारण कुकर्मी बन गया । एकबार संत उसके घर पधारे, उसकी पत्नी गणिका थी फिर भी संतो को प्रेमपूर्वक भोजन कराया, उसी समय अजामिल आ गया, अजामिल ने दक्षिणा मांगने की बात कही तो संतो ने कहा कि हे अजामिल ! इस पारणे में सोते बालक का नाम नारायण रखना यही तुम्हारी दक्षिणा है । संत इस प्रकार आशीर्वाद देकर निकल गये । समय वीतते अजामिल मृत्यु के नजदीक आया । उस समय उसे यमदूतों का भयंकर रूप दिखाई देने लगा जिसे देखकर वह डरा और नारायण - नारायण जल्दी यहाँ आओ ऐसा पुकारने लगा । उस समय इस प्रकार की पुकार सुनकर भगवान विष्णु के पार्षद आगये और यमदूतों को भगादिये, उस की सद्गति हुई ।

कहने का तात्पर्य यह कि - अजामिल जीवन भर अनीति से धन कमाया लेकिन पत्नी प्रेमपूर्वक संतो को एकही बार भोजन कराया जिससे संतोने उसे आशीर्वाद दिया परिणाम नारायण नाम रखने से उसकी मुक्ति हो गयी । शास्त्रानुसार एक ही बार नीति पूर्वक धन का उपयोग करने से यदि अजामिल की सद्गति हो गयी तो सदा इसीप्रकार नीति-रीति पूर्वक धनोपार्जन तथा खर्च किया जाय तो बाद में कुछ करने के लिए शेष रहता नहीं है ।

धनाढ्य ऐसे गृहस्थों को तो शिक्षापत्री में बहुत आज्ञा है - दान धर्म के जितने रास्ते बताये गये है उस पर यदि खर्च करते रहें तो धन का कभी नाश नहीं होता, बल्कि बढता ही रहता है । सत्संग में आज भी बहुतायत में उदाहरण है ।

संत या सत्पुरुष प्रेरणा करें तो उसे संकेत समझ कर उसका योग्य स्थान पर उपयोग होता है और आशीर्वाद भी मिलता है । इससे परिवार में सुख शांति मिलती है । आज प.पू.ध.धु. श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का एक दिव्य संकल्प है कि "श्रीहरि के दिव्य प्रसादी की अमूल्य वस्तुओं का एक उत्तम संग्रह स्थान हो, यह एक सदकार्य तो है ही इसके साथ श्रीजी महाराज की प्रसादी की वस्तुओं

का महामूल्य स्थान देने का, रख रखाव का एक उत्तम स्थान है । यद्यपि सत्संगी मात्र को भगवान की प्रसादी की वस्तुओं के प्रति अधिकप्रेम है तथापि वे उन वस्तुओं का रख रखाव अपने घर नहीं कर सकते इसलिए आज तो वैज्ञानिक ढंग से रख रखाव हेतु म्युझियम बन रहा है उसमें दे देना ही सबकी फर्ज है ।

ऐतिहासिक ताजमहल तथा स्मारक के रक्षणार्थ हम तथा सरकार कितना उत्सुक हैं ? जबकि ये तो हमारे इष्टदेव के प्रत्यक्ष प्रसादी की वस्तुये हैं । यह कोई एक व्यक्ति का कार्य नहीं है । यह सभी सत्संगी मात्र का कर्तव्य है जो निष्ठावाले हैं । एक गरीब बालाने प्रेमपूर्वक तांबा के पैसे को वृद्ध को दिया तो उसे ये हृदय में लगाये रहते थे ।

एक सादीसी गणित है कि - परिवार का प्रत्येक व्यक्ति प्रतिदिन १ रुपया पांच व्यक्ति रखे तो महीनें में १५०/- रुपेय हो जायेंगे । एख वर्ष में १८००/- रुपये होजायेंगे । वर्ष दो वर्ष तीन वर्ष तक भी १८००/-रुपये भी महाप्रभु श्री स्वामिनरायण के संग्रह स्थान के लिए अर्पण करते रहेतो, यह एक अमूल्य सेवायज्ञ हो जायेगा । एक पांच व्यक्तियों वाले परिवार से वर्ष में १८००/- रुपये की गिन्ती की जाय तो संप्रदाय तथा श्री नरनारायणदेव में निष्ठा रखने वाले समग्र सत्संग परिवारों की यह जमा राशी का संकलन किया जाय तो कितना विशाल कार्य हो सकता है । केवल अंगुली जितनी पतली धार को बहते रहने देना है । संग्रहालय रुपी बड़ी यज्ञ को हम सभी करने के भागीदार बन सकते हैं । नीतिपूर्वक प्राप्त किये हुए द्रव्य को यथार्थ स्थान में लगायेंगे तो देव, आचार्य, संत सभी का आशीर्वाद मिलता रहेगा ।

जीवन का तीसरा परिणाम प्रीतिपूर्वक परमात्मा की भक्ति करना । श्रीजी महाराजने स्पष्ट कहा है कि चाहे कितना बड़ा साधक हो यदि उसकी परमात्मा में शरणागति नहीं होगी तो वह परमात्मा से विमुख हो जायेगा । श्रीहरि की सम्पूर्ण शरणागति से ही कोई भी कार्य निर्गुण बन जाता है ।

किसी कार्यारंभ के समय ऐसी प्रार्थना करनी चाहिए हे महाराज ! यह सब आपने ही दिया है, आपकी कृपा से यह सभी कार्य देख रहा हूँ । इसलिए ऐसी कृपा करना कि कोई अनीति से पैसा न आजाय । दशांश या वीशांश ही दान देने का नियम नहीं रखना चाहिए । परमात्मा ने जीवन के लिए २४ घंटे दिया हैं जिस में से २ घन्टा ४० मिनिट दशांश, १ घन्टा २० मिनट वीशांश भगवान की भक्ति में अर्पण करना चाहिए ।

रामकृष्णादिक अवतार उतना सुख नहीं दिया जितना श्री सहजानंद स्वामीने सभी के घर विचरण करके अनेक भक्तों को सुखी किया । अपने पास तो सत्शास्त्रों का दिव्य खजाना है । जिस में से श्रीहरि के अद्‌भुत चरित्रों का आनन्द प्राप्त कर सकते हैं । ये चरित्र इतने दिव्य है कि रात्रि में श्रवण मनन करके सो जायें तो निंद्रा में भी श्रीहरि का साक्षात् दर्शन हो जाय यहाँ मात्र शर्त इतनी कि श्रीहरि की प्रीतिपूर्वक शरणागति होनी चाहिए ।

सत्पुरुषों के प्रति यदि प्रेम रखेंगे तो परमात्मा से प्रीति होती जायेगी । परमेश्वर के दिव्य मूर्ति का प्रकाश अपने हृदय में प्रत्येकक्षण प्रज्वलित रहेगा । लेकिन दुर्भाग्यवश मशाल के पास रहकर भी अन्यत्र प्रकाश खोजने वाली बात है । तो अंधाकार के सिवाय हाथ कुछ नहीं आने वाला है ।

वस नीति से कमाना और रीति से उपयोग करना प्रीति से भजन करना, भक्ति करना, यह सूत्र यदि जीवन में अपनायेंगे तो सुख खोजने कहीं अन्यत्र जाना नहीं होगा वह अपने आप घर आयेगा ।

प्रयागराज मंदिर का एड्रेश तथा फोन

श्री नरनारायणदेव देश के इलाहाबाद प्रयाग राज में श्री स्वामिनारायण मंदिर तथा धर्मशाला बहुत समय से कार्यरत है । जिसका पता एवं फोन अधोनिर्दिष्ट है

श्री स्वामिनारायण मंदिर (प्रयागराज)
एम.जी.मार्ग, मेडिकल चौराहा, के.पी. कालेज के सामने,
जार्जटाउन, इलाहाबाद-२११००१ (यु.पी.)
फोन : (०५३२) ३०९९८९९

सद्‌गुरु ब्रह्मानंद स्वामी (पर्व-२)

- कनुभाई जानी (ईसरो अमदाबाद)

गढडा में दादा खाचर के दरबारमें भोजन कर महाराज अक्षर कमरे में आराम करने पधारे है । केवल मूलजी ब्रह्मचारी चंम्मर डोला रहे है । कपाळ पर तिलक की तरह दो अंगूली रख महाराज योग निद्रा की तैयारी कर रहे है । तभी बहार से थोडी आवाज आती हैं । मूलजी ब्रह्मचारी को हुआ की वे लोग महाराज को आराम भी करने नहीं देंगे ।

दरवाजे पर दस्तक हुई । महाराज ने इशारा किया । मूलजी ब्रह्मचारीने खडे होकर दरवाजा खोला तो सामने ब्रह्मानंद स्वामी ! महाराज उन्हे देख कर बैठ गये । ब्रह्मानंद स्वामी साष्टांग प्रणाम कर महाराज के चरणों के पास बैठे । सामान्यस्म से ब्रह्म मुनि जी जहाँ भी हो वहाँ का वातावरण जीवित रहता है । चाहे सभा हो या अक्षर कमरा । किन्तु आज ..... ये ब्रह्ममुनि नीचे देख कर बैठे है । महाराज भी चुप है । सामने ब्रह्मचारी भी चुप है । वातावरण शांत है । ब्रह्मानंद स्वामी की आँख से आँसू की धारा वह रही है । और आंसू महाराज के चरण में गिरते है । और महाराज ब्रह्मानंद स्वामी के मस्तक पर हाथ सहलाने लगे । स्पर्श में माँ की ममता थी । ब्रह्मानंद स्वामी महाराज की गोद में शिर रखकर रोने लगे यह देख मूलजी ब्रह्मचारी स्तब्ध हो गये कि ब्रह्मानंद स्वामी तो एक-रुप से वीरता के प्रतीक ! उनका



त्याग, वैराग्य, वाणी, कीर्तन सभी में मात्र वीरता की ही बात । किंतु आज स्वामी को क्या हुआ है ।

महाराज तो अंतर्यामी, ब्रह्मानंद स्वामी को शांत होने दिया पश्चात मनुष्य लीला करते हुए जैसे कुछ नहीं जानते वैसे पूछा । "स्वामी ! आप तो संतो के आदर्श हो । आपको क्या हुआ है ?" - फिर भी ब्रह्मानंदमुनि शांत

"भरी सभा में हमने आपकी जमानत ली है की आपको माँ की कमी नही होने देंगे ....."

"क्या बोले ? ब्रह्मानंद स्वामी के जवाब में थोडासा आक्रोश था और भक्ति, प्रेम था बोलने तो देते नहीं है ।"

"आप सब समझते है सर्वावतारी है । फिर भी हमसे बुलवाना चाहते हो..... कब तक ..... कब तक हम आपको छुपा कर रखे ? दयालु सर्वावतारी, सर्वोपरि साथ में हो तो भी हमे दूसरे के कीर्तन गाने को ?" ब्रह्मानंद स्वामी के आँखो से अब भी आँसू बहते है । "इससे अच्छा तो कीर्तन बंद करने की आज्ञा दीजिए....."

"स्वामी ! हम तो अनंत जीवो के कल्याणार्थ अक्षरधाम से सभी साथ में आये है । जिस प्रकार कई जीवो का कल्याण हो उस प्रकार गाना । कीर्तन परोक्षभाव हो फिर भी परोक्षभाव न लाकर प्रत्यक्ष भाव ही लाना । कोई मुमुक्षु-सुपात्र हो तो उसे समझाना जिस प्रकार पचे उस प्रकार उससे बात करना ।"

"किंतु महाराज प्रत्यक्ष की बात हम खुल्लेआम कब कर पायेंगे ?"

"ब्रह्मचारी को आज्ञा की ।" ब्रह्ममुनि ने प्रस्न किया । मेरा यथार्थ स्म समझे है और उनके बेग तो देखो ? इतना बोलते बोलते तो श्रीजी महाराज पराभाव में आये और बोले "ब्रह्मानंदमुनि ! आपके रचित एक सौ कीर्तन कोई गायेगा तो मैं उसे प्रत्यक्ष दर्शन दूंगा ।"

ब्रह्मानंद स्वामी करुणासागर की करुणा में डूब गये तो मूलजी ब्रह्मचारी तो महाराज का यह नया स्म देख उनकी तथा ब्रह्मानंद स्वामी की समझ को प्रणाम कर रहे थे ।

ब्रह्मानदं स्वामी की श्रीजी महाराज की पहचान कोई जैसी तैसी नहीं थी ।

एही मच्छ, एही कच्छ, एही सुकर तनुं धार्यो
एही बने नरसिंह, दृष्ट हरनाकंस मार्यो,
एही वामन वयुकीन, लीन पद तीन भुवत्रय
एही फरशीधर राम एही रघुवत किय जय जय
एही कृष्ण बुद्ध निकणंक एही, तेही भेटत भवभ्रम टले
कितने स्म 'लाडु' कहे, 'सो यह सहजानदं मिले'

इतनी सर्वोपरिता में समझ ! और वह भी लाडुदानजी जैसे महाविद्वान में ! किंतु यह पहचान कहाँ नयी थी ? भगवान अक्षरधाम से जिन मुक्तो को लाये उनमें से एक थे - ब्रह्मानंद स्वामी ! गर्भ में थे तब से ही रामानंद स्वामी के प्रकट की महिमा गाने वाले तो अक्षर मुक्त ही होंगे !

महाराज ने भक्तो के विविध प्रकार के अंगो की बात अलग-अलग वचनामृत में की है ।

प्र. ३३ - मूढपना, प्रीति तथा समझ
प्र. ४७ - भागवतधर्म निष्ठा, आत्मनिष्ठा
लो. २ - विश्वास, ज्ञान, शूरवीरता तथा प्रीति
म. ६२ - दासत्व, पतिव्रता तथा आत्मनिष्ठा
अं. १ - ज्ञान तथा प्रेम
अं. १४, १४ - नवधा भक्ति के अंतर्गत नव प्रकार के अंग

हरदम ब्रह्मानंद स्वामी के जीवन पर ध्यान केन्द्रित करते । किंतु जब सत्संग में किसी संत ता मुमुक्षु तथा परमभक्तो की बात करनी हो तो महाराज के द्वारा बताये गये भक्तो के लक्षण जानना आवश्यक है । उसके बगैर निष्ठा आती नही है ।

लाडुदानजी चारण जाति में जन्मे थे । मा-बाप की भक्ति के संस्कार तथा रामानंद स्वामी का सत्संग अब फकीरी पूछना ही क्या ? बालक लाडुदानजी ने वचपन से ही माता-पिता, पहचान वाले तथा गाँव तथा अगल-बगल के गाँव को दिव्यशक्ति का भास करवाया । उन पर बचपन से ही सरस्वती प्रसन्न थी । बगैर अभ्यास के ही अपनी बुद्धि से तथा चतुरता से दोहा, छंद की रचना कर सभी को आश्चर्य चकित कर देते ।

मुक्त पुरुषो के जीवन दूसरे जीवो से पहले से ही अलग लगते थे । जिस प्रयोजन से उसे जन्म दिया उसकी पूर्वभूमिका भी भगवान ही आयोजित करते है । लाडुदानजी की तीव्र बुद्धि तथा वाणीचातुर्य से प्रभावित शिरोही के राजा ने राज्य की तरफ से काव्यशास्त्र का अभ्यास करने के लिए कच्छ-भुज भेजा था ।

लाडुदानजी की बात करे उसके पूर्व चारण जाति की कुछ जानकारी प्राप्त करले । जिनको चारण की पहचान नहीं है ऐसे विचारवान् तथा समाज शास्त्री उन्हे गौण ज्ञाति में गिनते है । यह गलत है । हिन्दू शास्त्र में चारणो को देवकोटी में माना गया है । इनका सबसे बडा प्रमाण तो भगवान स्वामिनारायण ने चारण ज्ञाति को 'देव' मानकर दिया है । भक्त चिंतामणी में श्री निष्कुलानंद स्वामी ने जहाँ जहाँ चारण जाति का उल्लेख किया है वहाँ -वहाँ देवजाति शब्द का भी उपयोग किया है ।

हमें ज्ञाति के पिष्टवेषण में पडना ही नहीं है । ब्रह्मानंद स्वामी जैसे संत जहाँ जन्मे वह ज्ञाति ही नही लेकिन वह गाँव प्रदेश भी महान पुण्यशाली बन जाता है ।

खाण गाँव में से माहामूल्यवान रत्न लाडुदानजी सं. १८२८ माघ सुद-पंचमी (वसंत पंचमी) को जन्मे । जिनके जन्म से घर नही, गाँव में ही नही, वल्कि मुल्क में भी मंगल वातावरण हो वही दैवी पुरुष ! लाडुदानजी के जन्म से संपूर्ण मुल्क में खुशाली छा गयी और ऐसा क्यो न हो ? उनके मुख से तो सर्वावतारी पूर्ण पुरुषोत्तम नारायण की महिमा सारा जगत जानने वाला था और जो उदाहरणीय त्यागी साबित होने वाले थे ।

होनहार वीरवान के होत चीकने पात । लाडुदानजी ने बचपन में अनेक चमत्कार दिखाये थे ।

शंभुदानजी के घर में भोजन की कभी कमी नही होती । यह बात धीरे-धीरे गाँव में फैल गयी । इस बात की जाँच करने के लिए उनके घर लोग अचानक आने लगे । घर में दश-बारह का भोजन बनता और डेढसो दो सो लोग खाते फिर भी खत्म नही होता । सभी लोग इसे

अनुसंधान पृष्ठ नंबर १५

वाणी तथा वानी

को गार कर पीना चाहिए

- प्रो. महादेव धोरियाणी (राजकोट)

प्रियवाक्य प्रदानने सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः ।

अर्थात् प्रियवाणी बोलने से सभी संतुष्ट होते हैं । अप्रियवाणी बोलने से मनुष्य अपनी महानता को घटाता है। इसलिए वाणी ही मनुष्य का सच्चा आभूषण है । वाणी से मनुष्य की परीक्षा होजाती है ।

"शुभं वाच्यं शुभंवाच्यं नाशुभं कदाचन ।

आर्थात् - शुभ बोलना, शुभ बोलने से किसी का अशुभ होता हो तो कभी न बोलना ही अच्छा है ।

अपनी इस छोटी सी जीभ में लक्ष्मी का भी वास है । जहर भी है। वशी करण विद्या काभी वास है ।

"जिहवाग्रे बन्धनं प्राप्तं जिहवाग्रे मरणं ध्रुवम् ॥
अर्थात् बन्धन तथा मरण भी जिह्वाग्र में निहित है ।
जो थाय मीठी जीभ, तो थाय सर्व कार्य सिद्ध ।
जीभ मां जो राखे जहर, तो आखा मूलथी थाय वैर ।

जीभ में भले ही हड्डी नहीं है, वह अति कोमल है, पर दूसरे को नीचे गिरा देने की शक्ति जीभ में है । ईश्वरने भले ही जीभ को बत्तीस दांतो के बीच में किला बनाकर रखा है, फिर भी विन हड्डीवाली यह जीभ अपने मालिक के हड्डी को तोड़ दे ऐसी है ।

प्रियवाणी ही अलौकिक शक्ति है । कीमती धन है इसलिये वाणी को विचार कर प्रयोग करना चाहिए ।

शब्द सरीखा धन नहीं, जो कोई जाते बोल ।
हीरा तो दामे मिले, शब्द न आवे मोल ॥

मुख में से निकले शब्द की कीमत करनी हो तो हिये तराजू तौलिके तब मुख बाहर आन । बोला हुआ शब्द सामने वाले व्यक्ति को प्रिय लगना चाहिए । शब्द मुख रूपी खान में से निकलने वाले कच्चे हीरे के समान है । इसलिए शब्द को विवेक की कसौटी पर कसने के बाद ही निकालना चाहिए जीवन में सफलता प्राप्ति के लिए प्रियवाणी, निर्मलता, मधुरता, प्रसन्नता इत्यादि की जरूरत होती है । वाणी में यदि कर्कशता, कठोरता रहेगी तो निष्फलता ही मिलेगी । शब्द को अपनी इन आंखो से कोई देख सकता नहीं है । इसे कोई पकड़ भी नहीं सकता । इसलिए इसकी चोट भी अदृश्य होती है । तीक्ष्ण तलवार से भी अधिक चोट करने वाली यह वाणी होती है । शस्त्रों की चोट ठीक भी होजाती है लेकिन शब्द की चोट तो ठीक होने में अति दुष्कर है ।

"वचनेषु का दरिद्रता" ऐसे सुनहरे शब्द को स्वीकार करने वाला व्यक्ति समाज में व्यवहार कुशल तथा प्रेमास्पद होता है । लेकिन स्वार्थ सिद्धि के लिए मुख प्रसन्न रखना - मधुर बोलना, यह तो जनता को डराने जैसा है ।

"मधु तिष्ठति जिह्वाग्रे हृदये तुहलाहलम्" ऐशा जीवन नहीं होना चाहिए ।

जैसे सफलता के मूल में वाणी की मीठाश है, उसी प्रकार निष्फलता के मूल में वाणी की कर्कशता या कठोरता है । लोकहृदय को जीतने के लिए शब्दों में सहानुभूति की सुवास होनी चाहिए । प्रेम का पराग होना चाहिए । ऐसी प्रेममयी वाणी विशुद्ध मन में से ही प्रगट होती है ।

"जैसे मन में वैसे वचनमें" मन में जो भाव हो वही वाणी से प्रगट होता है । शब्दों को यदि सात्विक तथा शक्तिशाली बनाना हो तो मन को शुद्ध करना जरूरी है । जिसका मन शुद्ध उसकी वाणी शुद्ध ।

इसलिए कहा गया है कि "सौ बार विचार करके शब्द निकालना चाहिए, सात वार गार के पानी पीना चाहिए मुख में से शब्द निकालने से पूर्व विचार करना चाहिए । जो शब्द

बोलिए वह तौलकर बोलिए, कारण यह कि हम जो शब्द बोले ही नहीं है उसके हम मालिक हैं, जो शब्द बोल दिये उसके हम दास हो जायेंगे ।

शास्त्र में कहा गया है कि - "सत्यपूतं वदेत् वाक्यम् ।"

अर्थात् सत्य से पवित्र करके वचन बोलना चाहिए । जिस वात को न जानते हों उसमें मौन रहना चाहिए । बात सत्य हो तो भी उसे मधुरता से कहना चाहिए। वात इस प्रकार करनी चाहिए कि प्रसन्नता चारो तरफ फैलती रहे । विचारों को संक्षेप में क्रमशः प्रस्तुत करना चाहिए ।

एक व्यक्ति वात करता हो तो बीच से उस वात को काट कर दूसरे को नहीं बोलना चाहिए । वात करना जीभ के व्यापार की अपेक्षा मस्तिस्क का बनना चाहिए । "अति की नही गति" अति बातूनीभी निष्फलता का कारण बनता है । बोलना बड़ा सरल है । परंतु मौन रहना अति कठिन है । सौ वात की एक वात जो बोले उसे विचार कर बोले सत्य के साथ मधुर बोले । अधिक न बोले । यहि सफलता का राजमार्ग है ।

•

सच्ची मित्रता

- हितेशकुमार धनजीभाई पोकार (घडाणी-कच्छ)

आपतिमां अनुराग दाखवे ते
आप्तजन ।
मुशीबत मां मददगार बने ते मित्र ॥

एक गाँव में दो मित्र रहते थे, लाभशंकर और शामजी, इन दोनो के बीच गाढ मित्रता लाभशंकर ब्राह्मण का पुत्र था । और शामजी किसान का पुत्र था । किसी कारणवश शामजी ज्यादा पढ नहीं पाया । जब लाभशंकर शहर पढाई करने गया तब शामजी पिता को खेती में सहायता करने लगा ।

इस प्रकार उन्हे अलग होना पडा, किंतु अंतर की दोस्ती अतूट रही ! दोनो एक दूसरे को सदा याद करते थे ।

लाभशंकर शहर में मेट्रीक की परीक्षा पास की । तभी उसके पिता की तबियत बीगडी और ज्यादा बीगडी ! देखते ही देखते उसके पिता अक्षरनिवासी हो गये ..... और घर की जिम्मेदारी लाभशंकर पर आ गई ।

शामजी ने लाभशंकर से कहा - "मित्र ! किस्मत की बलिहारी को स्वीकार करो । और हिंमत रख तूं सहर वापस जा कर अभ्यास आगे बढा मैं तेरे माँ की देखभाल करुंगा ..... तु उसकी चिंता मुझ पर छोड दे ।

और माँ की जिम्मेदारी शामजी को सोंप कर लाभशंकर शहर में गया और शिक्षण कार्य आगे बढाया । इधर शामजी खेती का कार्य करता है और मित्र लाभशंकर की माता की सेवा पुत्र की तरह करता ।

लाभशंकर पढ लिख कर बडा अफसर बनता है । सुंदर पगार, घर और वैभव मिलता है । लाभशंकर ने शामजी को अपने साथ शहर में रहने का आग्रह किया । किन्तु शामजी ने कहा "मुझे मेरी खेती देखने दे और तेरी माँ की सेवा में तो मुझे स्वर्ग का सुख मिलता है ।"

इस प्रकार लाभशंकर शहर में और सामजी गाँव में उसमें भी एकाएक शामजी के पिता की मृत्यु हुई । खराब समय आया । लाभशंकर को पता चला और तुरंत गाँव पहुंचा । अपनी माँ और शामजी को समझा कर शहर में लाया और साथ में रहने लगे सामजी को योग्य नौकरी दिलायी ।

किन्तु शामजी ने इतना परिश्रम किया था की, उसे कुछ बीमारी हो गयी और बढती ही गयी । डोक्टरोने कहा कीडनी फेल है..... कोई अपनी कीडनी का दान करे तो ही इनकी जान बच शकती है ।

मित्र ऋण अदा करने का यह मौका था । लाभशंकर ने अपनी कीडनी दान किया । शामजी की जींदगी बच गई । मित्रता महक उठी

शेरीना मित्र सो मळे,
ताणी मित्र अनेक
आपति मां उभा रहे,
हजारो मांथी एक

साचि मित्रता इसी का नाम है । परस्पर पूरक बन कर जीये वही सच्चा मित्र है ।

इसलिए प्यारे सत्संगी मित्रो ! हम सभी एक दूसरे की सहायता करेंगे तो सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान अपने इष्टदेव हम पर खूब प्रसन्न होंगे ।

जैसी भगवान की इच्छा

- दिलीप वागडकर (यु.एस.ए.)

जैसी भगवान की इच्छा - यह वाक्य वांचने से होगा कि - वात तो सही है । कारण यह कि बहुत सारे लोग जो भगवान को नहीं मानने वाले हैं, जब कष्ट आता है, जब कोई रास्ता दिखाई नहीं देता तब वे कहते है कि जैसी भगवान की इच्छा । ज बकी भगवत्प्रेमी जन तो यह मानते है कि सब कुछ भगवान की इच्छा से होता है । यह एक धर्म प्रेमी वजीर की बात है । वजीर न हो तो राजा को राजकार्य चलाना मुश्किल पडता है यह सभी को पता है ।

एक दिन राजा और वजीर दोनो बैठे थे उसी समय राजा ने कहा कि चलो हम दोनो शिकार खेलने चलते हैं । वजीर ने हां कह दिया । राजा तथा वजीर दोनो शिकार करने निकल पडे । जंगल में जाकर शिकार करने के बाद श्रांत बैठे थे, उसी समय राजा शांति का अनुभव करते हुए अपनी तलवार को म्यानमें रखने लगे कि अंगुली बीच में आकर कट गयी । राजा को दर्द होने लगा । वजीर ने पट्टी बांधते हुए कहा कि भगवान जो करते है वह अच्छा करते है । इधर तो राजा को पीडा हो रही थी, उसमे वजीर की इस प्रकार की सलाह सुनकर राजा क्रोधित हो गये, और कहने लगे कि तलवार रखते समय अंगुली बीच में आगयी और कट गयी इसमें भगवान की क्या इच्छा । वजीर को राजा की इस बात पर हंसी आ गयी । यह देखकर राजा और भी क्रोधित हो गये और कह दिये कि आज से हम आपको वजीर के पद से च्युत करते है । आपकी हमें कोई जरूरत नहीं है । यह सुनकर वजीर ने राजा से कहा महाराज ? मैंअपनी भूल के लिए मांफी मांगता हूँ । यहाँ से में चला जाता हूँ । जैसी भगवान की इच्छा । यह सुनकर राजा बोले हम तुम्हें नौकरी से निकाल दिये इसमें भगवान की क्या इच्छा । चाहूँ तो पुनः रख सकता हूँ तो इसमें भगवान की क्या इच्छा । वजीर विना कुछ बोले वहाँ से निकल गया । इधर राजा के मन में विचार आया कि यदि विना शिकार किये मैं वापस जाउं तो लोग कहेंगे कि विना वजीर के राजा शिकार नहीं कर सके । इस लिए में अकेले शिकार खेलने जाऊंगा । दूसरे दिन एकाकी ही शिकार खेलने निकल गये । वहाँ जंगल में राजा गलत रास्ते पर चढ गये, कारण यह कि उनके साथ वजीर रहते थे, उन्हे जंगल का सभी मार्ग ज्ञात था । राजा उत्तरोत्तर गाढ जंगल में घुसते गये । वहाँ आदिवासी जंगलियो का एक टोला उन्हें घेर लिया और पकड़कर अपने सरदार के पास लेगये । सरदारने हुकुम किया कि इसे यज्ञ के पास बैठाओं । हमें आज की पूर्णाहुति में पूर्ण नर की आवश्यकता है । सभी तैयारी हो गयी और राजा को भी तैयार करके बैठाया । आदिवासी का पुरोहित आया और बलिस्थ राजा की पूजा करने लगा । अब राजा को विश्वास हो गया कि हमारी बलि तो निश्चित है । थोड़े समय का मेहमान हूँ । पुरोहित पूजा कर रहा था उसी समय राजा की अंगुली पर उसकी दृष्टि पडी और देखा तो उनकी अंगुली कटी थी । पुरोहित ने सरदार से राजा के अंगविकार की वात कही और बताया कि यह पूर्ण पुरुष नहीं है । इस लिए इसकी आहुती नही हो सकती है । आदिवासियो ने राजा को छोड़ दिया । राजा कुशलपूर्वक वापस राज भवन आ गये । अब तो राजा भगवान का बड़ा उपकार मानने लगे राजा राजभवन में बजीर को बुलाकर सभी बात बताई ।

वजीरने कहा महाराज ! जो कुछ होता है वह भगवान की इच्छा समझनी चाहिए । यह हमारा मानना है । यदि आपकी अंगुली न कटी होती तो आप की बलि हो जाती । राजा ने कहा हमने आपको निकाल दिया इसमें भगवान की क्या इच्छा वजीरने कहा महाराज ! यदि आप नौकरी में से नहीं निकाले होते तो आपके साथ हम जंगल में आते और आदिवासियों का सरदार मुझे पूर्णपुरुष मानकर मेरी आहुती दे देता । इसलिये मैने आपसे कहा था कि जो भगवान करते है वह अच्छा करते है । राजा को वजीर के प्रति आदर आया और पुनः उन्हें नौकरी में रख लिया ।

सत्संग सुरभि :

उनसे हम दूर नहीं है

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला (अहमदाबाद)

गुजरात में श्रीजी महाराज जहाँ-जहाँ गये वहाँ वहाँ अपना स्थान बनाये । गुजरात के स्थापत्य की अपनी यह लाक्षणिकता है । तालाब के किनारे, वृक्ष के नीचे, आंगन के बगल में, मंदिर के पास में, इत्यादि स्थानो पर अपना स्मृति चिन्ह अंकित करते गये हैं । जहाँ श्रीजी महाराजने सभा की वहाँ के लोगों के हृदय में धर्म श्रद्धा को जागृत करके जीत लिया । ऐसे पवित्र स्थल से निकलें तो मन में महाप्रभु के प्रति अपने आप एक जागृति उत्पन्न हो जाती है ।

गढपुर में जहाँ महाराज सभा करते वहाँ निम्ब वृक्ष है । उस के चारो तरफ चबूतरा किया हुआ है । एक बार महाराज सभा करके विराजमान थे । सभा में वीरदास पटेल भी थे । उनकी भक्ति पवित्र थी । धुनि-कीर्तन हो रहा था उसी समय पटेल का कोई साथी पूछने आया । माभा आज किस खेत में हल लेजाना है आप बता दीजिए । पटेल को हुआ कि यह प्रपंच छोड़कर ही हम इस सभा में आये है, तो भी यह प्रपंच यहाँ घेरे आया । सभा में सभी हमे उत्तर देना ही पडेगा । यद्यपि धर्म सभा में जगत का भाव-व्यवहार आवे यह वीरदास को अच्छा नहीं लगा, परंतु घर से आते समय यह स्पष्टी करना भूल गये थे, इसका उन्हें खेद हुआ, जिससे उन्हे बताना पडा कि "निम्ववाले वीघे में हल लेजाना ।

किसान वहाँ से चलदिया, लेकिन पटेल को याद आयी कि जो कहना था वह तो रह गया । इसलिये साथी को पुनः बुलाकर कहे कि देखो खेत सूख गया है थोडा सावधानी से जोतना अन्यथा बैंलो का कन्धा पक जायेगा । वीरदास ने शांति से समझा कर किशान को विदा किया । महाराज के सामने हाथ जोड़कर कहे कि महाराज ? हमारी वजह से सभा में विक्षेप हुआ ।

महाराज तो चकोर की तरह पटेल की सभी वातें सुन लिये थे । इसलिये कुछ बोले नहीं, बल्कि कहे कि व्यवहार तो करना ही चाहिए । प्रभु में यह अनोखी रीति थी कि व्यावहारिक बात में से आध्यात्मिकता की तरफ लाना । लोगों को दृष्टांन्त भी मिलता था । लोंगो को लोकोपभोग्य बने ऐसी नीति-रीति इनकी सभा में होती थी । महाराज ने पटेल से पूछा कि खेत ठूंठा है यह आपको कैसे पता ?

महाराज जहाँ खेत ठूंठा हो वहाँ बैल की डोरी को ढीली कर देते है, जहाँ नरम हो वहाँ डोरी को कस कर दैते है अन्यथा बैल की कांध आ जाती है । पटेल ने समझाया ।

महाराज मंद-मंद हंसने लगे । सभाको संबोधित करते हुए कहे कि किस खेत में कठोरता है और किस खेत में नरमता है इसका ज्ञान ही मालिकी है । जबकि अपके पास पाँच तसू (एक इंच जितनी जमीन) जमीन है तो भी कहाँ क्या है इसका ख्याल नहीं है ?

उस समय प्रकाशान्द स्वामी ने कहा महाराज ? अपना खेत पांच तसू का कहाँ है ? काया तो पूरे पांच हाथ की है । इसमें जब कोई रोग आता है । तब ख्याल आता है कि इसमें कुछ विकार हुआ है । इसके विना ज्ञात होना संभव नहीं ।

महाराजने कहा, पांच तसू का खेत अपना अंतःकरण है । रक्त को जो घुमाता रहता है वह चरखा है । उसकी वात हमने नहीं किया है । आध्यात्मिक हृदय तो अलग ही है । यदि चरखा घूमते रहे तो काम-क्रोध का प्रवेश नहीं होता लेकिन अंतःकरण ध्यान रखे तो ख्याल आयेगा कि अन्दर शत्रु भरा हुआ है । इसका जब ज्ञान हो जाय तो उसे बाहर निकालना चाहिए, पहरेदारी करनी चाहिए । कोठी के पीछे सांप छिपा हो, इसका ज्ञान होतो उसे हटा ही देना चाहिए, उसे वहाँ रहने नहीं देना चाहिए । किसी भी प्रयाससे उसे बाहर छोड आना चाहिए । इसी प्रकार काम-क्रोधातिक ठूंठा का ख्याल नहीं है । ऐसा मानकर जैसे किसान अपने खेत को सम करता है वैसे ही अपने मन को भी पवित्र रखना चाहिए ।

सभा के बीच में रानी कुशल कुंबरबा की तरफ हाथ का इशारा करते हुए कहे कि आप हमारे लिए किसलिए थैली बनाई है ? भेंजिये ।

यह एक आश्चर्य था । दूर-दूर से मानव आते कोई क्या लाया है सभी महाराज को खबर पडजाती थी । किसी को सभा क्षोभ होता तो महाराज समझाते थे । उसके सामने से बड़े प्रेम के साथ बुलाते और इच्छित वस्तु मांगते । और उसके ऊपर प्रसन्नता व्यक्त करते । अपने प्रेमी भक्तजनों से प्रेम करने के लिए ही अनंत कोटी ब्रह्मांड के अधिपति इस पृथ्वी पर विचरण कर रहे थे ।

कुशलकुंवरबा ने अपने हाथ से चावल बीनकर थैली भरकर महाराज के पास भेजी थी । उसे महाराज स्वीकार करके, एक मुठ्ठी हाथ में लेकर पुनः थैली में रख दिये थे । सभी को बताये कि इनका जैसा राजपाट है वैसी भक्ति भी है । इनके यहाँ नौकर चाकर की कोई कमी नहीं है । परंतु हमारे ऊपर इतना अधिक प्रेम है कि हमारे लिए चावल को एक-एक दाना बीनकर लाई हैं । हमारे सत्संगी स्त्री-पुरुष सभी ऐसा ही भाव रखते है । इनकी जितनी प्रशंसा की जाय कम है । पुनः कहने लगे कि - धान जब था तब तक उपयोगी नहीं था, जब उसकी भूंसी निकल गयी तो कितना उपयोगी हो गया । ऐसा हमें बनना है । सार ग्रहण करना चाहिए । जिस प्रकार कुशलकुंवरबा ने भक्तिपूर्वक चावल को एक एक दाना बीनकर शुद्ध की है उसी प्रकार आप सभी अपने जीवन को शुद्ध रखना । लोग आप का विश्वास करेंगे । सत्संग शुद्ध दिखाई देगा । भगवान की प्रसन्नता मिलेगी । जो इस प्रकार शुद्ध रहेंगे उन के इस पांच तसू में हम निवास करेंगे ।

सभा पूर्ण होते ही कितने भक्त महाराज की विदाई लेने आए, दंडवत करके बोले - महाराज ! हमारे ऊपर दया रखना । उनके ऊपर प्रसन्न होकर महाराज ने आशीर्वाद दिया । और कहा कि आप लोग भी हमारे ऊपर दया रखना ।

हरिभक्त जब गोरंडा तक पहुंचे तब एक हरिभक्तने सभी को रोककर पूछा, महाराज ने कहा कि आप लोग भी हम पर दया रखना । यह क्यो ! यह समझ में नहीं आया । इसका मर्म क्या है ? सभी खडे रहे ।

सभी ने कहा हमें भी समझ मेंनही आया, चलो, सभी महाराज से ही पूछते है ।

महाराज अभी वहीं बैठे थे । कथावार्ता कर रहे थे । उनके पास आने पर महाराज ने कारण पूछा । तो सभी ने अपनी शंका महाराज के सामने रखदी । तब महाराज ने उन्हे समझाया आप लोग कौन है । यह हाथ है, यह पैर है, यह नेत्र है वह आप नहीं हो । आपका घर है, आपका परिवार है, नाम है मिलकत है, यह भी सब आप नहीं हो ।किसी को २० वर्ष किसी को ६० वर्ष हुआ लेकिन इस शरीर का हुआ । जो पांच प्राण है वह भी आप नहीं हो । तब आप कौन हैं ? शिवाभाई या केशवजी या पूंजाजी इन सभी नामों का नाश तो होने वाला है ।

जो आप है वह आपका अंतःकरण है वही आपकी पूजी है उसी में मेरे रहने का स्थान है । उसका रक्षण आप नहीं करोगे तो हम कहाँ जायेंगे । इसी लिए आप सभी को मैने कहा कि हमारे ऊपर ध्यान रखना । हमारे रहने के स्थान को भ्रष्ट नहीं करना । यह सभी समझाकर सभी को विदाकिया । इस समय सम्पूर्ण सभा खड़ी हो गयी और महाराज को प्रणाम करके विदा हुए ।

भगवान ने सभी को अंतःकरण की शुद्धि की वात की थी, उसी में भगवान का निवास होगा । यह नित्य पूजा पाठ भक्ति-ध्यान-धारणा इत्यादि द्वारा संभव है । यह सभी का स्मरण करते अहोभाग्य मानते अपने गंतव्य पर चले ।

उनसे हम दूर नहीं है, वे हमसे दूर नहीं है सभी के अंतःकरण में वस केवल एक ही आवाज थी ।

वे सभी स्थल आज भी विद्यमान है, जिसे हम आज प्रसादी की जगह कहते है, जब भी वहाँ से निकलते हैं उस समय महाप्रभु की वाणी का गुंजारव हृदय में गूंजने लगता है कि आप सभी अपने हृदय को पवित्र-शुद्ध रखेंगे तो हम उसी में विराजमान होंगे, यह सभी महाप्रभु के छत्रछाया में जाने से अनुभव होता रहता है, इसलिए उन पवित्र प्रसादी के स्थलों पर अवश्य एकबार सभी को जाना चाहिए ।

सत्संग बालपाठिका
संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

भरी सभा में भगवान मां बने

- शास्त्री हरि स्वामी (गांधीनगर)

जनक राजा को राज्य कार्य करते हुए भी राज्य का बन्धन नहीं था । मैं राजा हूँ ऐसा अहंकार नहीं था । यह बात बहुत कठिन है । शुकदेवजी को शंका हुई तो उसका समाधान इस प्रकार किया कि भोजन करने के लिए बैठे उसमें नाना विधि भोजन सामग्री पिरसी तथा ऊपर से एक पत्थर की शिला भी लटकादिया । पत्थर जिसमें लटकाया वह अत्यन्त पतला था । उसमें से धागा कडाक ऐसी आवाज के साथ टूटने की आवाज आती थी । शुकदेवजी को हुआ कि यह पत्थर मेरे माथे पर गिरेगा तो भोजन तो दूर रहा हमी नहीं रहेगें । चित्त सतत पत्थर में ही था । भोजन करते रहे लेकिन पत्थर गिरने की निरन्तर डर रहती, अब गिरेगा अब गिरेगा । भोजन सामग्री सभी जैसे तैसे खालिये क्योंकि आमंत्रण भोजन करने के लिए था ।

हंसते हुए राजा जनक ने पूछा कि ब्रह्मन् ! मेरा भोजन अनुकूल आया ? अनुकूल की क्या बात है ? आप पिरसे हम झटपट खालिये । यहाँ तो अशांति है, ऊपर से डोरी टूटने की आवाज आती रहती है, कभी-भी पत्थर गिर सकता है । ब्रह्मन् ! ऐसी स्थिति मेरे सामने सदा रहती है जो आज केवल भोजन के समय आप को थी । जैसे भोजन का स्वाद आपको नहीं आया वैसे ही इस राज्य के सुख तथा सत्ता का कोई स्वाद नहीं है । यह राज्य शासन करने के लिए करता हूँ । इसमें मैं राजा हूँ । इन सभी का पालन करता हूँ । रक्षण करता हूँ यह सब मेरे भीतर नहीं है । क्योंकि हम मृत्यु के स्वागत में सदैव तैयार रहते है । कब वह आ जाय । इसलिए मैं परमात्मा में मन लगाये रहता हूँ ।

इसका दूसरा उदाहरण ब्रह्मानंद स्वामी का है । वडताल का मंदिर कितना भव्य लगता है । यह २५ वर्ष पहले का नहीं बना है । कम से कम पौने दो सौ वर्ष पूर्व का निर्मित है । उस समय ट्रक, ट्रेन इत्यादि कोई वाहन-साधन नहीं था । मानव द्वारा ऐसा भव्य मंदिर बनाना संभव नहीं है, कोई ऐसा कार्य करे तो वह प्रथम अपना नाम पत्थर की शिला पर अवश्य टंकित करता है । इतने बडे कार्य में कहीं भी कोई नाम नहीं है । किसी ने इसका उद्घाटन नहीं किया ऐसा कहीं उल्लेख नहीं मिलेगा । आज एक पत्थर भी कोई कही लगाता है तो अपना नाम अवश्य लिखवाता है । इसी का नाम महामोह है । कितने इंजीनियर कितने कारीगर इस में काम करते है लेकिन नाम पत्थर यह किसी अन्य का ही होता है । यहीं मोह का कारण है ।

भाल विस्तार में से गुजरात की तरफ जब प्रभु आ रहे थे उस समय किसी बावा को बुखार से कलझते देखा था । उस समय ज्वर मांपक यंत्र नहीं था । फिर भी भगवान स्वामिनारायण के साथ एक संत भजनानंद स्वामी थे जो वैद्य थे उन्हीं से प्रभु ने कहा ! इस बावा को दवा दे दीजिए । औषधिका सेवन करते ही थोडा आराम मिला । प्रभु खड़े रहे । महाराज का स्वभाव "अति दयालु स्वभाव छे स्वामीनो, पर दुःख द्वारी रे, वारी बहुनामी तो, कोई ने दुःखियो रे देखी न खमाय दया आंणी रे, अति आकणा थाय....."

स्वयं का प्रवास रोक कर भी इस महात्मा को दवा दिलवाये जिससे उसे आराम हुआ । इसके अलांवा २-४ पुडिया और भी दिलवादिये । बाद में भगवान ने पूछा कि बावाजी ? गाँव तो यहाँ से दूर है, गाँव के आसपास किसी राम मंदिर या शिवालय में रहते तो । गाँव का कोई श्रद्धालु आप की देखरेख रखता । इस पर बावाजीने कहा हाँ गाँव वाले सदा आग्रह रखते हैं कि आप आकर गांव में रहिए । हम आपकी सेवा करेंगे । लेकिन यह स्थान छोड़कर हम जा सकते नहीं है क्योंकि इस स्थान पर पचीस तीस वर्ष से रहे हैं, वृक्षों को लगाये हैं, इनकी देखरेख

कौन करेगा ? इसी को वद्ध अवस्था कहते हैं ।

ब्रह्मानंद स्वामीने ऐसा यह अद्‌भुत मंदिर बनाया है जिसे मानव देखता ही रहे । देखने के साथ इसकी छाप हृदय में उतरे विना रह नहीं सकती । स्वामिनारायण भगवानने आज्ञा की । ब्रह्मानंद स्वामी ? महाराज ? आप इस मंदिर में पधारे तो नये कीर्तन बनाना बन्द हो गया चलो मेरे साथ । अच्छा महाराज ! ज्यों हि स्वामिनारायण भगवान ने आज्ञा की उसी समय ब्रह्मानंद स्वामी ने अपने शिष्यों से कहा साधु ! जाकर मेरे आसन से पूजा की सामान, उत्तरीय वस्त्र, धौंत वस्त्र, ले आओ । वहाँ आसन पर भी नहीं गये । उनका शिष्य पूजा सामग्री लाकर दिया और वहीं से निकल पडे .....।

"भरी सभा में भूधरजी तमे माडी थया छो मारी रे ....." भरी सभा में जैसे बाप बेटे को बुलावे ऐसे आपने बुलाया । इसलिए खुश होकर महाराज के साथ निकल पड़े । ऐसा नहीं कह सके कि अभी हिसाब किताब बाकी है । मित्रो आप लोगों ने पढा न ? जगत तथा महापुस्त्रों में कितना अंतर है । भगवान के प्रतापी ब्रह्मानंद स्वामी ऐसा महान कार्य करने वाले भी निर्लेप रहे । तथा जिसके ऊपर इष्टदेवकी कृपा न हो वह एक वृक्ष लगावे उसमें भी बंध जाता है । याद रखना आप जितने बडे बन जाओ, चाहे जितना महान कार्य किर्यें हों तो भी यदि भगवान का स्मरण करते रहेंगे तो आपको बन्धन का पाश न लगेगा । हमें सावधान रहना है कारण यह कि ब्रह्मानंद स्वामी जिस मार्ग पर चले थे उसी मार्ग के हम भी मुसाफिर हैं । इसबार की वार्ता थोड़ी कठिन है न ? इसलिए सावधान होकर याद रखना । भगवान हमारे मां-बाप हैं वे अवश्य रक्षा करेंगे । ब्रह्मानंद स्वामीने लिखा है कि - "भरी सभा में भूधरजी तमे माडी थया छो मारी रे ॥

•

विश्वासी तरजाता है

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

एक पंडितजी अच्छी कथा करते थे । भागवत वांचते थे उनकी कथा मनमोहक थी । कथा सुनने से लगता था की आज की वर्तमान स्थिति ठीक ऐसी हैं । मनोरंजक कथा होती । सभी लोग भाव विभोर होकर कहते बहुत अच्छी कथा हो रही है ।

एकदिन वह कथाकार भागवत दशम स्कंध की कथा सुना रहे थे । उस समय दो चार लोग सभा खंड में आ पहुंचे । जिंदगी में कभी भी भगवान के आगे माथा झुकायें नहीं थे । चोरी करना ही जिसका धंधा था । चोरी करने के इरादे से इस सभा में आकर बैठे थे । उस समय कथा में कृष्ण-बलदेव की कथा चल रही थी कि श्रीकृष्ण सुन्दर सुवर्ण वेष्टित मयूर पुच्छ धारण किये हुए हैं । कान में दोनो भाई नंगजडित सुवर्ण कुं डल पहने हुए हैं । सोने का महार्घ हीरा जडित हार पहने हुए हैं । सोने के बाजू बन्ध तथा हाथ में सोने का कडा पहने हुए हैं । पग में सोने की पैजनी पहने हैं। इस प्रकार दोनो भाई अलंकारो से अलंकृत दिवस भर गौ चारण करके सायंकाल घर आते हैं ।

इन दोनो चोरों को हुआ कि दो बालक अलंकारो से सुसज्ज गाय चराते हैं । इतना अलंकार मेरे हाथ में आ जाय तो सम्पूर्ण जीवन चोरी करना न पडे । जब कथा पूर्ण हुई तो सभी श्रोताजन पंडितजी की पोथी पर फल-दक्षिणा रखकर घर गये । पंडितजीभी अपनी पोथी तथा दक्षिणा फलादिक लेकर घर चलने लगे । इसी बीच वे दोनो चोर आकर बीच में ही पंडितजी को धर दबोचे । पंडितजी गिड़गिडाने लगे अरे भाई हमें छोड़ दो । चोरो ने कहा हमें आप के पास से कुछ लेना नहीं है लेकिन एक बात आप बताओ कि जो आप ने कथा में श्रीकृष्ण बलराम की बात की उनका पता क्या है ? पंडितजीने कहा वृन्दावन । वृन्दावन कहाँ है ? मथुरा के बगल में । दोनो चोर वृन्दावन जाने के लिए निकल पडे । मन में सतत श्रीकृष्ण बलदेवजी का ही स्मरण कते हुए - उनके कान में कुंडल हाथ में कड़ा, गले में हार, माथे पर मुकुट इन्ही सबका स्मरण करते, भगवान के स्वस्म का चिंतन करते मथुरा पहुंच गये । मथुरा पहुंच कर पूछे भाई वृन्दावन कहाँ है ? किसीने वृन्दावन का रास्ता बताया । खोजते-खोजते वृन्दावन पहुंच गये । सतत वहीं चिन्तन की वे सामने आ जाते तो लूट लेते । दूसरे दिन जमुना के

किनारे किसी से पूछे कि श्रीकृष्ण-बलदेवजी क्या यहीं पर गाय चराते थे ? तब उस मनुष्यने हाँ कर दिया । तब उनचोरों को हो गयां कि कल गाय चराने नहीं गये होंगे तो आज अवश्य जायेंगे । हम उन्हें लूट लेंगे । उस दिन वहीं छिपकर दोनो चोर बैठ गये अखंड वही रटन जो कथा में सुने थे । सायंकाल हुआ दोनो चोर सावधान होकर बैठे है, उधर भगवान श्रीकृष्ण बलदेवजी से कहते हैं कि इस धरती पर पुन: गायें चराने चलें । उधर चोर राह देखकर बडी सावधानी से बैठे थे । उसी समय भगवान श्रीकृष्ण बलराम के साथ गाय चराते हुए दिव्यालंकारों से युक्त आ गये । गायों को चराने लगे । दोनो को हो गया कि अब आ रहे है, इसलिए सावधान हो गये । अब तो भगवान जब समीप आते हैं दोनो उन्हें पकड लेते है, भगवान कहते है अरे भाई हमें छोड दो लेकिन चोरोंने सभी कुछ उतार लिया । एक गठरी बनाकर अपने गाँव की तरफ चलते हुए । गाँव में आये तो विचार आया कि थोड़ी दक्षिणा पंडितजी को देते चलें । उन्हीं से यह काम संभव हुआ है । आधी रात में दरवाजा खटखटाया, आधी रात में कौन आ गया है । घबडाकर दरवाजा खोले तो दोनो चोर खडे थे । दोनो बडे प्रसन्न थे । दोनों ने कहा आपने हमारा काम कर दिया है इसलिए आपको दक्षिणां देने आये हैं । उन आभूषणों में से एक आभूषण पंडितजी को दिया । और कहा कि किसी को कहना नहीं । पंडितजी को बडा आश्चर्य हुआ । कि पांच हजार वर्ष पहले की बात आज सत्य कैसे हो सकती है ।

मित्रो ! यही रहस्य है, पंडितजी जिसे पुरानी वात कह रहे थे, जो हजारों वर्ष पहले वीत गयी है । उसी को चोरों ने वर्तमान समय की सत्यवात मान लिया तो काम हो गया । भगवान का दिव्य दर्शन हुआ । सुवर्णालंकार मिला, बुद्धि अच्छी हो गयी । चोरी का धंधा छोड़ दिया अच्चा काम करने लगे । मेहनत करके कमाने लगे । भगवान की भजन भक्ति करने लगे ।

आज हमें भी इससे ज्ञान- लेना चाहिए कि स्वामिनारायण भगवानने स्वहाथों से प्रतिष्ठित नर-नारायणदेवों में आज भी प्रत्यक्ष विराजमान है । ऐसे प्रभु के ही वचन है । इसे सत्य मानकर भगवान का दर्शन करेंगे तो भगवान जरुर आप के सत्य संकल्प को पूर्ण करेंगे, क्योंकि भगवान सदैव नित्य-वर्तमान ही रहते है ।

पृष्ठ ७ से आगे

सद्गुरु ब्रह्मानंद स्वामी (पर्व-२)

लाडुदानजी का प्रताप मानते थे । अरे ! अब तो किसी के भी घर कोई मांगलिक अवशर आता तो उन्हे अपने घर ले जाते जिससे कीतने भी लोग भोजन करते फिरभी खत्म नहीं होता । सभी कहते लाडुदानजी के हाथ में पद्म का चिन्ह है तो कोई कहता की उनके दाहिने पाँव में ऊर्ध्वरेखा है । कोई उन्हे अवतारी सिद्धपुस्र कहते ।

इस बात की पुष्टि है - स.गु. ब्रह्मानंद स्वामीने मूली मंदिर की पाट यहाँ उन्होने सोने के लिए बनवाई थी । जिस पर बैठते और सोते थे । यह पाट और आसन । स्वामी के स्वधामगमन के पश्चात उस पाट को संतोने भंडार में रखी थी । उस पर बनाया हुआ भोजन रखते थे । आज तक उस बरतन से अनाज खत्म नहीं हुआ । एकबार भुज से सौ लोगो का संघ आया वह भी चार बजे शाम को उन्हे उसमें से खिलाया फिर भी खत्म नहीं हुआा ।

जयनाथ निरजंन, भवदु:ख भंजन,
जनमन रंजन, जग त्राता
जयकाम निकंदन वर सुरवंदन
धर्म सुनंदन दै भ्राता
जय महितल मंडन, खलबल खंडन
विषय विखंडन वनवाशी
जय सहायक संतन, काल
निकंतन
आदि न अंतन अविनाशी ।

ऐसे अभूतपूर्व भाषाकर्म के कवि बने ? ऐसे कर्म के लिए जगन्नियंताकी कृपा चाहिए । इसीलिए ब्रह्मानंद स्वामी एक ही है । दूसरे ब्रह्मानंद स्वामी के लिए ईश्वर को फिर से अवतार लेना पडे किंतु इसके लिए ब्रह्मानंद स्वामी बनना पडेगा - मैं ढाढी महाराज को .... गाते हुए छोटापन नहीं लगे वही ब्रह्मानंद में डुबकी मारते है ।

(क्रमश:)

?????????????? प्रश्न पेटी ??????????????



साधु भक्तिनंदनदास गुरु शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी

(श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर)

प्रश्न : १ गढपुर श्री स्वामिनारायण में कौन कौन से देव बिराजमान हैं ? और कौन सी दिशा में कौन देव बिराजमान हैं ?

प्रश्न : २ श्री स्वामिनारायण भगवान गादी पर बिराजमान हुए उस समय उनकी उम्र कितनी थी ?

प्रश्न : ३ चारेय युग का वर्ष विगतवार समझाईएँ ?

प्रश्न : ४ संप्रदाय में कौन-कौन से शास्त्र मान्य हैं ?

प्रश्न : ५ श्री स्वामिनारायण भगवानने स्वहस्ते निर्माण किया हुआ जुनागढ मंदिर की साल और तिथि समझाओ ?

प्रश्न : ६ प्रलय के प्रकार कितने हैं ? और कौन-कौन ?

प्रश्न : ७ भगवान श्री स्वामिनारायण के एकांतिक भक्त विष्णुदास किस गाँव के थे ?

जनवरी २००६ महीने के प्रश्नपेटी का सच्चा उत्तर तथा उत्तर देने वालों का नाम ।

(१) जेतलपुर की गंगामा (२) शिक्षापत्री श्लोक ११४ (३) वनीताका स्म (४) भटवदर गाँव, युगलदास (५) गोलीडा गाँव (६) पुलस्त्य ऋषि (७) वचनामृत अंत्य, प्रकरण १८

१. मृदुलाबहन जे. महेता (मांडवी-कच्छ)
२. अंजनाबहन मनुभाई पटेल (नांदोल)
३. वीगाबहन भावसार (अहमदाबाद)
४. अरविंदाबहन नरेशभाई भावसार (चांदलोडीया)
५. अमरशीभाई वशरामभाई (नवसारी)
६. साकरबहन नटवरभाई पटेल (नांदोल)
७. सां.यो. कंचनबा तथा कुंदनबहन (मेडा)

नोंट : प्रश्नपेटी का उत्तर देने वाले लाईन वाले पेपर पर स्वच्छ अक्षर में लिखकर भेंजे तथा नाम स्पष्ट पढा जा सके ऐसा लिखे ।

श्री स्वामिनारायण कार्यालय, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कासमुर अहमदाबाद-३८० ००१.

श्री प्रभा हनुमानजी मंदिर जमीयतपुरा के बदलाये हुए फौन नंबर : २९२८९२३०

जाहर खबर

समस्त समाज को सूचित किया जाता है कि श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली के उपमहन्त के पद पर स्वामी नरेन्द्रप्रसाददास गुरुस्वा. लक्ष्मीप्रसाददासजी थे । जिसने स्वयं महंत पद तथा त्यागी के स्म में वस्त्रों का त्याग किया है, एवं विवादित चराडवा राधाकृष्ण गौसेवा ट्रस्ट के ललित पटेल को पहले विमुख कर दिया गया है, जिसके साथ मिलकर गलत गोरखधंधा करके संप्रदाय तथा मंदिर के विरुद्ध प्रवृत्ति करते थे, जिस कारण मूली तथा अहमदाबाद के त्यागी पंच की सिफारिश से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने विमुख कर दिया है । जिसे सभी सत्संगी लोग नोंट करलें.

- महंत स्वामी श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद-१.

।। भक्तिसुधा ।।

शिक्षापत्री में पतिव्रता धर्म

- रीटा बहन रसिकभाई गोळविया
(हीरावाडी-बापुनगर)

भगवान श्री स्वामिनारायण ने अपने हाथो से स्व-स्म शिक्षापत्री में स्त्रियों के धर्म श्लोक नं. १५९, १६०, १६२ में लिखा है गृहस्थाश्रमी के धर्म प्रकरण में स्त्री धर्म का निस्मण किया गया है ।

शिक्षापत्री के १५९ वे श्लोक मे सुहागिन स्त्रियों के विशेष धर्म के विषय में कहा है । हमारी आश्रिता जो भी महिला हों वे अपने पति की चाहे अंधा हो, लंगडा हो, दरिद्र हो, नपुंसक हो, रोगी हो, चाहे जैसा भी हो उसकी सेवा करनी चाहिए, कभी कटु वचन नहीं बोलना चाहिए ।

जिसका पति विद्यमान हो ऐसी सधवा स्त्री के धर्म में आता है कि उसे अपने पति को ईश्वर की तरह मानकर सेवा करनी चाहिए । उनके अनुकूल होकर रहना चाहिए । पति के स्वभाव से विपरीत वर्तन करने वाली स्त्री को कुलटा कहा गया है । जो पति के विपरित व्यवहार करे वह सात जन्म तक राक्षसी के भयंकर दुःखवाली योनी में जाती है ।

पतिव्रता स्त्री को अपने घर के अंदर जैसी परिस्थिति हो उसके अनुसार आयोजन करके घर चलाना चाहिए । पुस्म का कार्य कमाई करने का है । स्त्री का काम घर की शोभा बढाने की है । पति के कमाये धन को व्यवस्थित आयोजन करना स्त्री का धर्म है । बालक, बुजुर्ग, नौकर, सभी का पोषण करना तथा बालको में संस्कार सिंचन करना स्त्री का धर्म है । स्त्री को गृहलक्ष्मी कहा गया है । घर में कोई वस्तु नहीं है ऐसा नहीं कहना चाहिए, जो न हो उसे लाना है ऐसा कहना चाहिए । पत्नी पति तथा बालकों को खिलाकर ही भोजन करे । जिस घर में ऐसा होता है उस घर में लक्ष्मी का वास होता है । घर में आरोग्यता रहती है । शांति रहती है । सुसंस्कारी बालक होते है । बालक बुद्धिमान होते है ।

पतिव्रता स्त्री का पति क्रोधी, आलसी, प्रमादी, हो तो भी परमात्मा की कृपा समझ कर रहे तो उसका जीवन सुखमय बनेगा । भगवान के लिए रसोई बनाकर पति को भोजन कराने के बाद जो स्वयं खाती है उसके पति में स्वभाव में परिवर्तन हो जाता है । पतिव्रता स्त्री अपने पति के प्रति वफादार रहे ।

श्रीहरि अपनी माता को ज्ञान, देते हुए कहते है कि हे माता सधवा स्त्री अपने चंचल स्वभाव का त्याग करके सदा पतिव्रता धर्म में रहकर अपने पति को देव तुल्य मानकर सेवा करनी चाहिए ।

शिक्षापत्री के १६० वें श्लोक में सुहागित स्त्रियां कितनी भी सुन्दर स्म-यौवन से युक्त पुस्म हों तो भी उसका संग न करें । स्वयं का पति चाहे जैसा भी हो-स्म, यौवन प्रतिकूल हो तो भी उसी में मन लगाना दूसरे में मन नहीं लगाना । अपने पति को सभी पुस्मों की अपेक्षा सुन्दर यौवन युक्त प्रवीण समझे । उस के समान जगत में कोई नहीं है ऐसा समझे दूसरे पुस्म की तरफ दृष्टि नहीं करनी चाहिए । कभी कभी पर पुस्म कामी दृष्टि से देखकर ललचाते है । भ्रष्ट करते है । जब अपना पति न हो तो दूसरे के घर बैठने नहीं जाना-चाहिए । शिक्षापत्री के १६१ वें श्लोक में बताये अनुसार कोई भी पतिव्रता स्त्री अपनी नाभी, छाती, कटिभाग का प्रदर्शन न करे । वस्त्र धारण किये विना निर्वस्त्र कभी नहीं रहना । भांड-नाटक देखने नहीं जाना, निर्लज्ज स्त्री, स्वैरिणी, कामिनी, पुंश्चली स्त्री का संग नहीं करना चाहिए ।

पतिव्रता स्त्री अपनी नांभी, कटी, वक्ष इत्यादि को मर्यादा में रखे । आजकल मर्यादा हीन पहनावा बढा हुआ है । विषय वासना बढे ऐसे वस्त्र धारण नहीं करना चाहिए । वस्त्र पहनने में मर्यादा अवश्य रखनी चाहिए । कहीं बाहर जाने के समय मोटा वस्त्रपहनकर तथा मर्यादा में ही जाना चाहिए पतला वस्त्र जिसमें

अंग प्रदर्शित हो ऐसा नहीं पहनना । रजोगुणी वस्त्र का त्याग करना चाहिए । सतोगुणी वस्त्रको धारण करना चाहिए ।

कभी भी भांड नाटक देखने नहीं जाना चाहिए । निर्लज्ज स्त्री की संगत नहीं करना चाहिए । बहुत खानेवाली स्त्री की संगत, बहुत झगडालू स्त्री की संगत, कामी स्त्री की संगत कभी नहीं करनी चाहिए ।

जो स्त्री अपने पति के अनुकूल हो, धर्म में प्रेमवाली हो, भजन भक्तिवाली हो, बालकों के पोषण में मन लगाती हो, जैसा भी पति मिला हो उसी को देव मानती हो ऐसी स्त्री की मित्रता करनी चाहिए ।

शिक्षापत्री के १६२ वें श्लोक में स्पष्ट किया गया है कि जिसका पति परदेश गया हो वह आभूषण धारण न करे, पतला कपडा न पहेने हास्य विनोदादिक न करें । दूसरे के घर न जाय । भगवान श्री स्वामिनारायणने सधवा स्त्रियों के विषय में लिखा है कि पतिपरदेश में हो तो उपरोक्त कार्य नहीं करना लेकिन आत्मीय संबन्धी भाई-काका-मामा-बेटा इत्यादि के यहाँ जाने में कोई दोष नहीं है ।

उपसंहार - अपने घर में जैसी परिस्थिति हो वैसी रसोई बनाकर ईश्वर को नैवेद्य लगाना चाहिए । पति को तथा बालकों को भोजन कराकर पश्चात स्वयं खाना चाहिए । छोटे बच्चो को मारना नहीं । वालकों के प्रति दया का भाव रखने से ईश्वरीय कृपा होती है ।

अपना पति बाहर से आवे उस समय अच्छा व्यहार करना चाहिए चाहे पूर्व में जो भी हुआ हो तात्कालिक नहीं करना । बाद में जब स्वच्छ चित्त हो जाय तब मधुर वाणी से बीती घटना को बताना चाहिए ।

विवाहित स्त्रियां अपने परिवार में एक सूत्रता बनी रहे इसका ध्यान रखें । जहाँ एकता होती है वहाँ सुख शांति मिलती है । जहाँ एकता न हो वहाँ कलियुग का वास होता है और कडवास बनी रहती है । इसलिए स्त्री का यह धर्म है कि इसका अवश्य ध्यान रखें । मछियाव में सास बहु में एकता नहीं थी जिससे भगवान वहाँ से चले गये साथ में संत भी चले गये । राजमहल था तो भी सभी काल कलह होती थी । पतिकी आयुष्यकामना से पति का नाम कभी नहीं लेना चाहिए । पति के नाम वाला दूसरा पुरुष हो तो भी वह नाम नहीं लेना चाहिए । माथे पर विन्दी तथा सिन्दूर सदा लगाये रखना चाहिए यही पतिव्रता की निशानी है । इसके साथ पति को आयुष्य तथा सौभाग्य को बढाने वाला है ।

अपने पति का जूठन खाना लेकिन दूसरे गरीब को भी नहीं देना । अधिक खर्च नहीं करना । रजस्वला धर्म को छिपाना नहीं । रजस्वला में पति का स्पर्शनहीं करना । चौथे दिन स्नान करके अपने पति का मुख देखना । मूसल, झाडू, देहली इत्यादि जगहों पर बैठना नहीं चाहिए ।

अपने पति की निंदा कभी नहीं करनी चाहिए । पति की निंदा करने वाली स्त्री का साथ नहीं करना चाहिए। संभोग के अलांवा अपने पति के साथ निर्लज्ज वर्तन नहीं करना । पति से ऊँचे स्थान पर नहीं बैठना । पति के साथ खराब वर्तन करने से या तिरस्कार करने से स्त्री कुत्ता श्रृंगाल या चांडाली होती है ।

अपने पति को छोड़कर पर पुरुष के साथ जो स्त्री व्यभिचार करती है वह उलूक होती है । पति के विना जो मिष्ठान्न खाती है वह सूकर होती है । पति को तुकार करके बुलाने वाली दूसरे जन्म में गूंगी होती है । व्यभिचार कराने वाली स्त्री दोनो कुल का नाश करती है । अंत में स्वयं नरकमें जाती है ।

जिसकी पुत्री पतिव्रता हो (उदाहरण - बाला भक्तिदेवी) उसके माता पिता धन्य होते है, पति की पत्नी पतिव्रता होती है । वह पति पुण्यशाली होता है जिसकी पत्नी पतिव्रता होती है ।

पतिव्रता स्त्री के पुण्य से पिता के वंश के तीन तथा माता के वंश में तीन तथा पति के वंश के तीन पीढी तक के लोग स्वर्ग में सुख पाते हैं ।

पृथिवी पर जितना तीर्थ है वे सभी पतिव्रता के चरणों में है । पतिव्रता को प्रणाम करने से पापियों का पाप नष्ट हो जाता है । उनके

चरण से पृथिवी भी पावन होती है। पतिव्रता स्त्री धर्मपालन करे भक्ति नहीं करे तो भी वह सतीलोक को प्राप्त करती है। पतिव्रता स्त्री धर्मपालन करे तथा भगवान की भक्ति करे तो वह भगवान के धाम में जाती है।

पतिव्रता के प्रभाव से यमराज भी पति की आयुपूर्ण होते हुए भी वापस चले जाते है। यही पतिव्रता धर्म का प्रभाव है। सीतामाता की तरह प्रत्येक स्त्री अपने पति के सुख में सुखी तथा दुःख में दुःखी बने। पति को परमेश्वर समझकर सेवाक रनी चाहिए। जिसमें उसे अविनाशी पद की प्राप्ति हो।

(शिक्षापत्री - १५९ से १६२ भाष्य विवेचन तथा सत्संगी भूषण प.पूज्या गादीवाला द्वारा लिखित में से सारांश स्वरूप)

●

सत्संग की चाहना

- रमीलाबहन के. मोदी (हिंमतनगर)

ईश्वर का मूर्त स्वरूप चित्रवृत्ति को एकाग्र करने का सर्वोत्तम साधन है। मूर्ति पूजा के माध्यम से अपने भीतर स्थित ईश्वर के स्वरूप को सरलता से जाना जा सकता है। जिस किसी भी देवी-देवता को स्थापित करके विधिवत नियमित पूजार्चन करने में आता है उसी को मंदिर कहते हैं। मंदिर के विना विधिवत पूजा संभव नहीं है। मंदिर आत्मबोध तथा ईश्वर के प्राप्ति का शाश्वत सदाव्रत है। मूर्ति के दर्शन से आत्मशांति मिलती है। इसीलिए देव मंदिर में दर्शनार्थजाने का बडा माहात्म्य बताया गया है। महाभारत कार महर्षि वेदव्यासजीने लिखा है कि देव मंदिर या संत महान पुरुष के दर्शनार्थ जानेवाले को एक एक कदम में एक एक राजसूय यज्ञ का फल मिलता है। मंदिर के निर्माण कार्य में तन, मन, धन से सहयोग करने वाले को शेष-शारदा-महेश भी वर्णन नहीं कर सकते हैं। क्योंकि मंदिर सत्कर्म करने का एक मात्र सदाव्रत है। वहाँ दर्शनार्थ आनेवाले का दशांश पुण्य का फल प्रत्यक्ष या परोक्ष मंदिर के निर्माण कार्य में सहभागी को प्राप्त होता है।

देव मंदिर में सेवा करने का अवसर मिलना ही कठिन है। यह अवसर भाग्यशाली को ही मिलता है। जो सार्वभौम राजा हुए है वे भी प्रभु के लिए सर्वत्याग कर दिये हैं। फिर भी प्रत्यक्ष परमात्मा किसी को मिले नहीं है। केवल प्रत्यक्ष परमात्मा ही कल्याण की बात किये हैं। कल्याण करने वाले अवतारों में सर्वप्रथम स्थान तो श्रीजी महाराज का है जिसने रात दिन एक करके सत्संग समाज के लिए उत्थान का पथ निर्दिष्ट किया।

सतानंद मुनिने भगवान का नाम "स्व स्वरूपाचलंस्थितिः" रखा था। स्वस्वरूप के सुख से जो सुखी है, पूर्ण काम है, निस्पृह है, फिर भी भक्तो के कार्य हेतु आविर्भूत होते हैं। श्रीजी महाराज ने शिक्षापत्री के २०९ के श्लोक में कहा है कि "मेरी वाणी ही मेरा स्वरूप है।" उन्होंने स्वरूप निष्ठा तथा धर्मनिष्ठा का सुन्दर समन्वय किया है। वाणी से द्रोह हुआ तो स्वरूप का द्रोह समझना चाहिए। अंतःकरण शरीर के नाश होने पर ही वासना का नाश होता है और परमतत्व की प्राप्ति होती है।

ज्ञान के साथ ध्यान भी होना चाहिए। जिससे मनुष्य को पांचवार मानसी पूजा करके ध्यान का अभ्यास करना चाहिए। इस समय परमात्मा तो कृपा साध्य हैं। लेकिन जीव आलस्य के कारण परमात्मा के माहात्म्य से वंचित रहजाता है। अंतःकरण में केवल परमात्मा का ही ध्यान, चिंतन, मनन होता रहे तो यह लोक परलोक दोनो सरल हो जाएगा।

यदि स्थिर चित से, चाहना पूर्वक, आज्ञानुसार ध्यान, मानसी करने का अभ्यास किया जाय तो भगवान करुणार्द्र होकर भक्त पर अनुग्रह करते हैं। जिस प्रकार मातृभाषा के लिए कोई ट्रेनिंग की जरुरत नहीं होती वह स्वयं हृदयंगम हो जाती है, ठीक यही स्थिति परमात्मा में हैं। परमेश्वर के प्रति आलस्य का त्याग करके सतत प्रयत्नशील रहने वाले का अभ्युत्थान सरल हो जाता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति के भीतर चाहना का भाव आना आवश्यक है।

●

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद में आयोजित भागवत सप्ताह

सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में तथा प.पू.ध.धु. बडे महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा पू. महंत स्वामी निर्गुणदासजी की प्रेरणा से प.भ. कमलाबा भावसार की तरफ से श्री नरनारायणदेव की प्रसन्नता हेतु ता. २१-१-०६ से २७-१-०६ पर्यन्त श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण पू. पुराणी स्वा. धनश्यामचरणदासजी तथा शा.स्वा. हरिजीवनदासजी के वक्तापद पर तथा संहिता पाठ सत्यस्वरूपदासजी के वक्ता पद पर धूम-धाम से सम्पन्न हुआ । प्रतिदिन प.पू. आचार्य महाराजश्री सभा में दर्शन देने हेतु पदार्पण करते थे । ता. २७-१-०६ की पूर्णाहुति के दिन प.पू. महाराजश्री की उपस्थिति में शा.सत्यप्रकाशदासजी शा. घनश्यामजीवनदासजी आदि संतो ने यजमान की सेवा की खूब प्रशंसा की थी । यजमान परिवार ने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन-अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किया था ।

- कोठारी स्वामी धर्मप्रकाशदासजी

मणीयोर (ईडर देश) मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा

प.पू.ध.धु. बडे महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आशीर्वाद से इडर मंदिर के महंत जगदीशप्रसाददासजी ने षष्टि पूर्ति महोत्सव प्रसंग पर कुल ६ मंदिर निर्माण का संकल्प किया था, जिसके अनुसंधान में प्रथम इस मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा ता. ८-१२-०५ से १४-१२-०५ तक श्रीमद् भागवत सप्ताह विष्णुयाग इत्यादि का कार्यक्रम किया गया था । इस प्रसंग पर संप्रदाय के सुप्रसिद्ध विद्वान स.गु. शा.स्वा. हरिकेशवदासजी कथा करके सभी को प्रसन्न किये थे । कथा के वक्ता शा. हरिजीवनदासजीने सुन्दर मधुर वाणी में हरिभक्तो को कथा का लाभ दिया था । संहिता पाठ मे स्वा. भक्तिप्रकाशदासजी (फ्लोरिडा) ने लाभ दिया ।

ता. १४-१२-०५ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके आगमन पर भव्य शोभायात्रा निकाली गयी थी । प.पू. महाराजश्री ने सर्व प्रथम मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करके प्राण प्रतिष्ठा मूर्ति की आरती उतारे थे । यज्ञ की पूर्णाहुति भी किये थे । सभा में यजमान तथा गाँव के हरिभक्तों ने पूज्य आचार्य महाराजश्री का पूजन आरती करके आशीर्वाद प्राप्त किया था । इसके बाद इडर मंदिर के महंत स्वामी का हरिभक्तों ने सम्मान में साल को ओढाया था । प्रासंगिक सभा में रघुवीरस्वामी, शा. सत्यप्रकाशदासजी आदि संतो ने प्रवचन किया अंत में प.पू. महाराजश्री ने आशीर्वाद देते हुए कहा कि श्री नरनारायणदेव का वफादार रहकर मंदिर में दर्शनार्थ आते रहना । पटेल नारायणभाई वशरामभाई ने सभा में सन्मानपत्र वांचकर सुनाया । डी. के. पटेल ने आभार विधि की थी । सभा संचालन शा. आनन्दजीवनदासजीने किया था । इस प्रसंग पर प्रत्येक मंदिर के संत महंत पधारे हुए थे । सिंहासन एवं अंतिम दिन भोजन के यजमान अ.सौ. पुंजीबहन पटेल परिवार, इन्दुबहन, अमीताबहन थी । गाँव के हरि भक्तों ने तन, मन, धन से सेवा करके प्रसंग की शोभा बढाई थी ।

प.पू. लालजी महाराजश्रीने सभा में सुन्दर आशीर्वचन करके अलौकिक लाभ दिया । बहनो के आग्रह भरे आमंत्रण पर पूज्य गादीवालाने बहनो को दर्शन का लाभ देकर आशीर्वाद का सुख प्रदान किया था ।

- सत्यसंकल्पदास

कांकरिया मंदिर में धुनुर्मास में धुनि महोत्सव तथा पारायण

स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया में प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी की प्रेरणा से धनुर्मास में ता. १-१-०६ से १३-१-०६ तक श्रीमद् भागवत् पारायण कथा शा. यज्ञप्रकाशदासके वक्ता पद पर हुई थी । पूर्णाहुति की आरती प.पू. लालजी महाराजश्री आरती उतार कर सभी को आशीर्वाद दिया था । महिला वर्ग को आशीर्वाद देने हेतु पूज्य गादीवाला तथा श्रीराजा भी पधारी थी । जेतलपुर पाठशाळा के संत भी सुंदर प्रवचन किये थे ।

यहाँ धनुर्मास में प्रातः ६ बजे से ७ बजे तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुनि का कार्य सम्पन्न हुआ था । धनुर्मास की पूर्णाहुति संक्रांति-पूनम तथा शनिवार इस प्रकार एक साथ तीन अवसर पर ठाकुरजी का कष्टभंजन बाल स्वरूप हनुमानजी का तथा जपयज्ञ का दिव्यलाभ हजारों हरिभक्तों ने लिया । महंत स्वामी तथा कोठारी स्वामीने सुन्दर आयोजन किया । पू. देव स्वामीने ठाकुरजी का सम्पूर्ण मास पर्यन्त श्रृंगार करके दर्शन का लाभ दिया जिससे हरिभक्त खूब प्रसन्न हुए ।

- श्री न.ना.युवक मंडल

कलोल श्री स्वामिनारायण विश्वमंगल संकुल

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के लाभार्थ श्रीमद् सत्संगि भूषण पंचाह पारायण ता. १४-१२-०५ से १८-१२-०५ तक स.गु. शा.स्वा. प्रेमस्वरूपदासजी (नारायणपुरा मंदिर महंत) के वक्ता पद

पर धूमधाम से सम्पन्न हुआ था। पूर्णाहुति के दिन प.पू. बडे महाराजश्री पदार्पण करके सभी हरिभक्तों को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे। हरिभक्तों ने कथा का दिव्य लाभ लेकर श्री स्वामिनारायण म्युजियम निर्माण में अपना कीमती योगदान दिया था।

सिद्धपुर नवनिर्मित श्री स्वामिनारायण मंदिर के लाभार्थ पारायण

श्री स्वामिनारायण भगवान की असीम कृपा से तथा प.पू. बडे महाराजश्री एवं प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से राणीप बलोल नगर में ता. २६-१२-०५ से १-१-०६ पर्यन्त स.गु. शा.स्वा. प्रेमस्वरूपदासजी (नारायणपुरा मंहतश्री) के वक्ता पद पर श्री स्वामिनारायण मंदिर के लाभार्थ श्रीमद् सत्संगिभूषण सप्ताह पारायण का आयोजन किया गया था। राणीप, वाडज, नारायणपुरा, घाटोलडिया इत्यादि विस्तार में से हरिभक्त कथा सुनने आते थे। कथा के मुख्य यजमान अ.नि. रामाभाई आत्माराम पटेल (डांगरवा) गं.स्व. पुरीबहन रामदास पटेल तथा उनके पुत्र अ.नि. बलदेवभाई श्री जगुभाई, श्री जयंतीभाई (शिकागो) श्री गोविंदभाई, श्री कांतिभाई, श्री योगेन्द्रभाई (राजूभाई) परिवार के सदस्य उपस्थित थे। सहायक यजमान श्री सांकळचन्दभाई, छगनभाई पटेल (विहारवाला) श्री जयंतीभाई, साहणचन्द्रभाई पटेल उपस्थित थे।

बहनो को दर्शन आशीर्वाद का सुख देने हेतु प.पू.अ.सौ. गादीवाला पधारी हुई थी। पूर्णाहुति के दिन प.पू. बडे महाराजश्री आशीर्वाद देने हेतु पधारे हुए थे। जिस में सभी हरिभक्तों को बताये कि दो वस्तु याद रखने योग्य है तथा दोवस्तु भूलने या छोडने योग्य है। जिसमें अपने सद्गुणों को तथा दान को भूलजाना चाहिए, मृत्यु के समय, अंतकाल में भगवान तथा संतो का याद रखना चाहिए। सिद्धपुर मंदिर के लिए जो कोई भी छोटी बडी सेवा की है सभी धन्यवाद के पात्र हैं। भगवान श्री स्वामिनारायण सभी का कल्याण करें ऐसा सभी को हार्दिक आशीर्वाद है।-

मणीभाई खाडवाला कनुभाई पटेल

कुहा गाँव में श्रीमद् भागवत पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा कांकरिया महंत स्वामी तथा को. आनंद स्वामी की प्रेरणा से प.भ. काशीबहन खुशालभाई पटेल की तरफ से यहाँ श्री स्वामिनारायण मंदिर में शा.स्वा. प्राणजीवनदासजी तथा शा. यज्ञप्रकाशदासजी ने कथा का रसपान कराया था।

पूर्णाहुति के दिन प.पू. बडे महाराजश्री पधारे उस समय गाँव के हरिभक्तों ने धूमधाम के साथ स्वागत किया था।

प.पू. महाराजश्री जब सभा में विराजमान हुए उस समय यजमान परिवार श्री गिरीशभाई अंबालाल पटेल, श्री अरुणभाई तथा श्री नटूभाई गामडीवालाने प.पू. वडे महाराजश्री का पूजन आरती करके आशीर्वाद लिया था।

श्री स्वामिनारायण म्युजिय के निर्माण में यजमान काशीबा के परिवार ने ५१०००/- हजार तथा कुहागाँव के लोगोंने तीन लाख जितना दान दिया था।

इस प्रसंग पर कांकरिया के महंत श्री के गुरु पधारकर यजमान परिवार को आशीर्वाद दिया था।

संतो की प्रेरक वाणी के बाद प.पू. महाराजश्री ने यजमान परिवार तथा समस्त गाँव जनों को श्री स्वामिनारायण म्युजियम के दिव्य संकल्प की महिमा समझाकर आशीर्वाद दिया था।

अंत में काशीबा का घर पावन करके अपने स्थान पर पधारे थे। समस्त आगन्तुकों के भोजन की व्यवस्था श्री गीरीश पटेल, श्री अरुणभाई, श्री हिमांशुभाई तथा श्री मनोजभाईने की थी। *- नटुभाई पटेल गामडीवाला*

अधोनिर्दिष्ट मंदिरो में शाकोत्सव धामधूमसे मनाया गया

<u>नारायणघाट श्री स्वामिनारायण मंदिर तथा श्री प्रभा हनुमानजी मंदिर</u> में ता. ८-१-०६ तथा २२-१-०६ को प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से शाकोत्सव भव्य रीति से मनाया गया था। महंत स्वामी घनश्यामप्रकाशदासजी तथा देव स्वामीकी प्रेरणा से सुंदर आयोजन किया गया था। यजमान परिवारने सुंदर लाभ लिया था।

<u>माणसा श्री स्वामिनारायण मंदिर में</u> - प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने अद्भूत साग को बघार कर शाकोत्सव मनाया था। महंत स्वामी रामचरणदासजी तथा वल्लभ स्वामी की प्रेरणा से प.भ. अरविंदभाई केशवलाल पटेल (यु.एस.ए. वर्तमान में डांगरवा)ने यजमान पद का लाभ लिया था। उत्तर गुजरात के हरिभक्त आज अत्यंत प्रसन्न हुए थे।

<u>रिद्रोल (गांधीनगर) श्री स्वामिनारायण मंदिर</u> - ता. ८-१-०६ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने श्रीजी के इस प्रसादी के गाँव में श्रीहरि के जैसा शाकोत्सव मनाकर भक्तों को अलौकिक लाभ दिया था। नारायणपुरा के महंत शा.स्वा. प्रेमस्वरूपदासजी की प्रेरणा से प.भ. कनुभाई बाबुभाई पटेल

तथा प.भ. मनुभाई बाबुबाई पटेल यजमान बनकर प.पू. आचार्य महाराजश्री का पूजन अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किया था । स्वामी हरिकृष्णदासजी तथा महंत प्रेमस्वरूपदासजीने शाकोत्सव की महिमा समझाई थी । समस्त सभा को आचार्य महाराजश्रीने आशीर्वाद दिया ।

साबरमती - प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के प.भ. नारायणभाई बी. पटेल आदि सभी हरि भक्तों ने ता. २८-१२-०६ को कोटेश्वर गुरुकुल में सुंदर शाकोत्सव में ता. २८-१२-०५ को कोटेश्वर गुरुकुल में सुंदर शाकोत्सव का आयोजन किया गया । कथा वार्ता पूजन भजन आदि पी.पी. स्वामी (नाना) तथा रामकृष्णदासजीने किया ।

मोडासा (सोनीवाडा) श्री स्वामिनारायण मंदिर - यहाँ पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से स्वामी छपैयाप्रसाददासजी तथा संत पार्षद मंडलने धनुर्मास में पंद्रह दिन तक कथा वार्ता तथा ता. ८-१-०६ को शाकोत्सव करके हरिभक्तों को लाभ दिया ।

उवारसद श्री स्वामिनारायण मंदिर - प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री नरनारयणदेव युवक मंडल ने ता. ८-१२-०५ को मंदिर सुन्दर में शाकोत्सव मनाया गया था । छपैयाप्रसाददास तथा स्वामी विश्वप्रकाशदासजीने शाकोत्सव की महिमा समझाई ।

चाणस्मा श्री स्वामिनारायण मंदिर - यहाँ पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से शा.स्वा. सिद्धेश्वरदासजी की प्रेरणा से ता. १९-१-०६ के दिन हरिभक्तों ने शाकोत्सव मनाकर हरिभक्तों को लाभ दिया ।

आनन्दपुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर - प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से शा. सिद्धेश्वरदासजी की प्रेरणा से ता. १५-१-०६ को हरिभक्तोंने शाकोत्सव का आयोजन किया था ।

माणेकपुर (घनश्यामनगर) श्री स्वामिनारायण भगवानकी कथा का पारायण तथा शाकोत्सव प.पूध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से छोटे पी.पी. स्वामी की प्रणा से ता. ५-१-०६ से ता. ९-१-०६ तक शा.रामकृष्णदास के वक्तापद पर श्रीमद् भागवत पंचाह पारायण का सुंदर आयोजन किया गया था । पूर्णाहुति प्रसंग पर प.पू. आचार्य महाराजश्री ने शाकोत्सव करके हरिभक्तों को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । प. पूज्या गादीवालाश्री इस अवसर पर उपस्थित होकर महिला वर्ग को दर्शन का लाभ दिया था ।

विसनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर - प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री को आज्ञा से ता. २५-१२-०६ के दिन हरिभक्तों ने शाकोत्सव का आयोजन किया था । जिस में वडनगर मंदिर के शा. विश्वप्रकाशदास तथा अभिषेकप्रसाददास शाकोत्सव की महिमा समझाई थी उत्तर गुजरात के वहुतायत में सभी गाँवो के हरिभक्त इस शाकोत्सव में भाग लिये थे । धनुर्मास में प्रभात फेरी का भी कार्य क्रम किया गया था । प.भ. मुकेशभाई के. भावसार का संमान किया गया था ।

- कांतिभाई पटेल

मोटा उभडा (ता. विरमगाम) श्री स्वामिनारायणा मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ता. १३-१-०६ के दिन सांख्ययोगी बबूबा की प्रेरणा से भव्य शाकोत्सव सम्पन्न हुआ ।

वडनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर - प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वमी की प्रेरणा से ता. ८-१२-०५ के दिन दिव्य शाकोत्सव सम्पन्न हुआ । सभा में शा. नारायणवल्लभदास ने तथा विश्वप्रकाशदासने शाकोत्सव की महिमा समझाई थी ।

- स्वामी अभिषेकप्रसाददास

वावोल श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से वडनगर के शा.विश्वप्रकाशदास के वक्तापद पर श्रीमद् भागवत पारायण सम्पन्न हुआ । संहिता पाठ में अभिषेकप्रसाददास एवं सभा संचालन छपयाप्रसाददासने किया । इस प्रसंग पर समस्त धर्मकुल पधारकर दर्शन का अलौकिक लाभ दिया था । पारायण के मुख्य यजमान प.भ. मरघाभाई चतुरभाई पटेल परिवार था । श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ने इस प्रसंग पर सुन्दर सेवा का कार्य किया । प.पू. बडे महाराजश्री के दिव्य संकल्प श्री स्वामिनारायण म्युजियम का निर्माण कार्य में गाँव के हरिभक्तों ने खूब अनुदान दिया था ।- *पा. मुकुन्द भगत*

रामपुरा भंकोडा श्री स्वामिनारायण मंदिर

श्रीहरि की दिव्य प्रसादी के इस गाँव में धनुर्मास में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण भगवान को प्रसन्न करने के लिए प्रातः ५-३० से ७-०० श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुनि कथावार्ता तथा नित्य विविध प्रकार का भोग लगाया गया था । प्रतिदिन सभा में लाभ लेने वाले भक्तों को श्री नरनारायणदेव की मूर्ति, गोमुखी माला, नित्य नियम की पुस्तक इत्यादि भेंट में दिया गया था । *- अरजणभाई मोरी*

कालीयाणा श्री स्वामिनारायण मंदिर में सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की

आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. २५-१२-०५ को प्रातः ५ बजे पू. पी.पी. स्वामी संत मंडल के साथ जेतलपुर से पधारकर सर्व प्रथम महामंत्र धुनि एवं अपनी सुमधुर वाणी में कथा का सुन्दर लाभ देकर हरिभक्तों को प्रसन्न किया। मार्गशीर्ष शुक्ल सफला एकादशी को प्रातः ६ से सायंकाल ६ बजे तक १२ घंटे तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुनि की गयी थी। जिसमे बडी संख्या में स्त्री पुरुष उपस्थित होकर लाभ लिये थे। प.भ. मोरी लालजीभाई की तरफ से धुनि का आयोजन किया गया था। प.भ. डाह्याभाई जेटुभाई बूटिया तथा प.भ. भीखुभाई जेटउभाई मोरीने संतो को साथ रखकर सत्संगका कार्यकर रहे हैं। धन्य ऐसे शूरवीर भक्त लोग।

-मोरी लालजीभाई एच.

मूली प्रदेश का सत्संग वृत्तान्त

महाप्रसादीभूत ज्ञान वाव में शाकोत्सव संपन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा सुरेन्द्रनगर मंदिर के महंत स्वामी प्रेमजीवनदासजी की प्रेरणा से ता. ३१-१२-०५ के दिन भव्य शाकोत्सव का आयोजन किया गया था। मूली देश के प्रायः सभी गाँवों के हरिभक्तों ने लाभ लिया था। जिस में मूली, चराडवा, ध्रांगध्रा रतनपर मंदिर के संत पधारकर ज्ञानवाव की महिमा को समझाया था। अंत में मोबाइल फोन द्वारा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। शा. प्रेमवल्लभदासजी की प्रेरणा से सुरेन्द्रनगर श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ने आयोजन किया था।

- शैलेन्द्रसिंह झाला

लींवडी श्री स्वामिनारायण मंदिर (तपोवन)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से स्वा. भक्तवत्सलदास ने धनुर्मास में धुनि तथा शाकोत्सव का सुंदर आयोजन किया था। हरिभक्तों ने उत्तम लाभ लिया।- *पु. सुखनन्दनदास*

स.गु. देवानंद स्वामीका बडोल (भाल) श्री स्वामिनारायण मंदिर में धनुर्मास सम्पन्न

प.पू. बडे महाराजश्री एवं प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से तथा हजूरी पार्षद वनराज भगत की प्रेरणा से पू. मोहन भगत प.भ. कोठारी मालुभाई चावडा, प.भ. चन्दुभाई, शांतिभाई परमार, प.भ. कांतिभाई सिंदव, प.भ. वालजीभाई परमार, प.भ. जशुभाई परमार आदि हरिभक्तों के साथ सहकार से इस प्रसादी के गाँव में भव्य श्री स्वामिनारायण मंदिरमें धनुर्मास दरम्यान श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुनि-कथा-वार्ता आदि का कार्यक्रम किया गया था। इस कार्यक्रम में आवाल नरनारी सभी भाग लिये थे।

- लाभुभाई जे. चावडा

विदेश सत्संग वृत्तान्त

शिकागो (I.S.S.O., U.S.A.) श्री स्वामिनारायण मंदिर में धनुर्मास संपन्न

पूर्ण पुरुषोत्तम श्री स्वामिनारायण भगवान की पूर्णकृपा से तथा बडे महाराजश्री एवं प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से महंत शा.धर्मवल्लभदासजी की प्रेरणा से मंदिर में धनुर्मास दरम्यान प्रचंड ढन्ढी में हरिभक्त बडी संख्या में उपस्थित होकर श्री स्वामिनारायण महामंत्र का लाभ लिये तथा बहनो ने प्रतिदिन नये-नये पकवान बनाकर भगवान को भोग लगाया। पुजारी हरिनंदन स्वामी भगवान को नये-नये वस्त्रालंकर पहनाकर प्रसन्न किये। श्री नरनारायणदेव युवक मंडल इस वर्ष उत्साहपूर्वक अधिक संख्या में आते रहे। जिस समाचार को जानकर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने युवकों को विशेष आशीर्वाद दिया था।

धनुर्मास में प्रातः मंगला आरती, श्रृंगार आरती, इत्यादि करके महंत स्वामी सभा में श्री घनश्याम लीलामृत की कथा वांचते थे। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके आशीर्वाद से सत्संग प्रवृत्ति सुन्दर चल रही है।

- दिनेश हिरजीभाई कच्छी

कलिवलेन्ड चेप्टर (I.S.S.O., U.S.A.)

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान की पूर्ण कृपा से तथा प.पू. बडे महाराजश्री एवं प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा से कलिवलेन्ड चेप्टर में ता. १५-१-०६ के दिन शाकोत्सव का भव्य आयोजन किया गया था। सत्संगी बहनो ने श्रद्धा भक्ति से शाक एवं रोटी का भोजन बनाया था। यजमान परिवार प.भ. डाह्याभाई, प.भ. गीरीशभाई, प.भ. विनोदभाई, प.भ. चन्दनबा ने लाभ लिया था। बोस्टन मंदिर से आये हुए शा.स्वा. हरिप्रकाशदासने शाकोत्सव की महिमा बताई थी धर्मकुल की महिमा समझाईथी। प्रमुख श्री प्रकाशभाई, श्री हरेशभाई, श्री भीखुभाई ठक्कर, श्री गिरीशभाई, श्री साधुरामभाई, श्री दिव्यकांतभाई ने हरिभक्तों के साथ सहकार से यह आयोजन किया था।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा से सत्संग सुंदर चल रहा है।

- जयंतीभाई पटेल - वडवाला

वोशिंग्टन डी.सी. बुवी मेरीलेन्ड (I.S.S.O., U.S.A. चेप्टर)

प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ता.

१०-१२-०५ शनिवार शाम को २ बजे ठाकुरजी के समक्ष कथावार्ता-कीर्तन-धुनि हरिभक्तों के साथ समूह में की गयी थी। सभा में हरिभक्तों की संख्या खूब थी। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी कृपा से सत्संग सुन्दर चल रहा है। - *कनुभाई पटेल*

श्री स्वामिनारायण मंदिर सीडनी (I.S.S.O. ओस्ट्रेलिया चेप्टर)

प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से सीडनी मंदिर में विविध उत्सव धूमधाम से मनाया गया था।

ता. १६-१०-०५ को श्रीमद् भगवद् गीता के पारायण की पूर्णाहुति के अवसर पर वक्ताश्री का सन्मान किया गया था। श्री महेशभाई त्रिवेदी स्पोन्सर थे। ता. २३-१०-०५ के दिन प.भ. भाईलालभाई पटेल तथा शारदाबहन पटेल की तरफ से सभा हुई थी। जिस में कीर्तन भक्ति तथा रास किया गया था।

ता. ६-११-०५ के दिन भव्य अन्नकूट उत्सव सम्पन्न हुआ। हजारों हरिभक्त दर्शन करके धन्यता का अनुभव किये थे।

ता. १३-११-०५ के दिन प.भ. योगेशभाई, श्री निलेशभाई, श्री विपुलभाई, श्री जयेशभाई, प्रहलादभाई की तरफ से कार्यक्रम हुआ था। जिस में धुनि कीर्तन कथा वार्ता का आयोजन किया गया था।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा से सत्संग सुंदर चल रहा है।

- तेजस बी. पटेल

फ्लोरीडा (श्री स्वामिनारायण मंदिर I.S.S.O., U.S.A.)

फ्लोरीडा स्टेट लेकलेन्ड में अपने श्री स्वामिनारायण मांदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से शा. नारायणवल्लभदास की प्रेरणा से १६-१२-०५ से ता. १४-१०-०६ तक धनुर्मास में धुनि का आयोजन किया गया था। धुनि प्रतिदिन प्रातः ६ से ७ तक चलती थी। जिसमें प्रेसीडेन्ट श्री नलिनभाई डी. पटेल, श्री रमेशभाई हीराणी, श्री अरविंदभाई, श्री तेजेन्द्रभाई, श्री गोविन्दभाई, श्री बलदेवभाई, श्री महेन्द्रभाई, श्री अनिलभाई, श्री दिलीपभाई, श्री सुरेशभाई, श्री विनोदभाई, श्री चिन्मयभाई इत्यादि हरिभक्तों ने दैनिक उपस्थित होकर लाभ लिये थे। धनुर्मास में हरिभक्तों ने दैनिक उपस्थित होकर लाभ लिये थे। धनुर्मास में कुल ३०७ जितनी धुनि का नोट किया गया था। ता. ३०-१२-०५ तक नारायणवल्लभ स्वामी हरिभक्तों को कथा वार्ता का लाभ दिये थे। बाद में प.पू. महाराजश्री की आज्ञा से अहमदाबाद से भक्ति वल्लभदास तथा धर्मस्वरूपदासजी लाभ दे रहे हैं।

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावपूर्वक श्रद्धांजलि

अहमदाबाद : स.गु. शास्त्री स्वामी श्रीकृष्णदासजी (उ. ८५) गुरु पुराणी स्वामी मुकुन्दजीवनदासजी अयोध्या श्री स्वामिनारायण मंदिरमें श्रीहरिका अखंड स्मरण करते ता. १-२-२००६अक्षरनिवासी हुए है

राजकोट : श्री स्वामिनारायण घराने के गायक तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कृपापात्र प.भ. चंदुभाई दामोदरभाई राठोर ता. १५-१-०५ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं।

नाईरोबी : मूल कच्छ के पूर्व अफ्रिका में रहनेवाले प.भ. अरविंदभाई तथा उनके परिवार के कुल ४ हरिभक्त अकस्मात में अक्षरनिवासी हुए जिससे कांकरिया श्री स्वामिनारायण मंदिर में संत-हरिभक्तों ने श्रद्धांजलि देकर श्री स्वामिनारायण मंत्रकी धुनिकी थी।

अहमदाबाद : श्री नरनारायणदेव उत्सव मंदल के निष्ठावान हरिभक्त प.भ. मुकुन्दभाई भोगीलाल मोदी ता. २८-१२-०५ तथा प.भ. हरीशभाई अंबालाल शेठ ता. ७-१-६ के दिन श्रीजी महाराजका अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है। जिनके अक्षरनिवासी से उत्सव मंडल में कमी हुई है, श्रीहरि उन्हे अपने सेवा में रखें ऐसी प्रार्थना।

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर हवेली : सांख्ययोगी पानबा की शिष्या सांख्ययोगी पूज्या रतनबा ६३ वर्ष की उम्र ८-१-०६ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासी हुई है।

सुरत : (रामपुर) श्री स्वामिनारायण मंदिर में सेवा पूजा करती पू. सांख्ययोगी गजराबा १०५ वर्ष की उम्र में ता. ५-१-०६ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुइ अक्षरनिवासी हुई है।

धरमपुर (ता. कडी) : प.भ. जीवराजभाई तथा प.भ. कांतिभाई, परसोत्तमभाई पोपटलाल ता. २५-१२-०५ के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।





मणीयोर(इडर देश) श्री स्वामिनारायण मंदिर में ठाकोरज
कि प्राण प्रतिष्ठा करके आरती उतारते हुए प.पू. महाराजश्री

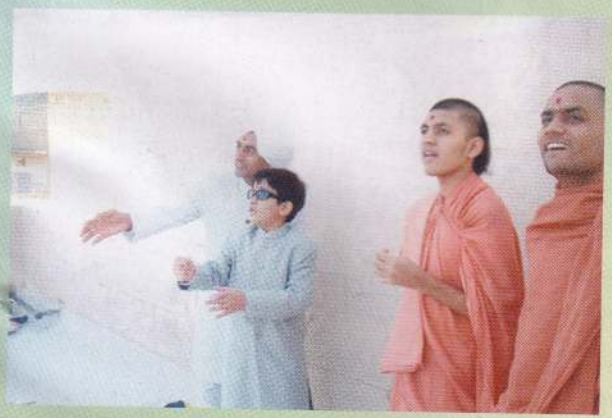
मूली मंदिर में वसंत पंचमी के दिन राधाकृष्णदेव व
पाटोत्सव अभिषेक करते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्र
और प.पू. लालजी महाराजश्री ।



मणीयोर श्री स्वामिनारायण मंदिर में यजमान परिवार
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आरती उतारते हुए ।



रिद्रोल मंदिर में ठाकोरजीकी आरती उतारते हुए प.पू.ध.धु.
आचार्य महाराजश्री ।



प.पू. लालजी महाराजश्री उत्तरायण के दिन संत-पार्षदो के
साथ पतंग उडाने की खुशी व्यक्त करते हुए ।



मणियोर श्री स्वमिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर
यज्ञ विधि करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।





अहमदाबाद के शांत, रमणीय नारायणपुरा विस्तार में श्रीहरि के छट्ठे वंशज श्रीजी महाराज के अपर स्वरूप प.पू. बडे महाराजश्री के दिव्य अलौकिक संकल्प श्रीहरि के प्रसादी की चीज वस्तु बेनमून-भव्य श्री स्वामिनारायण म्युझियम के

Praful Kharsani